लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

अप्रेल-जून, 2019

बरस : 42 अंक : 3 पूर्णांक : 143

संपादक
श्याम महर्षि

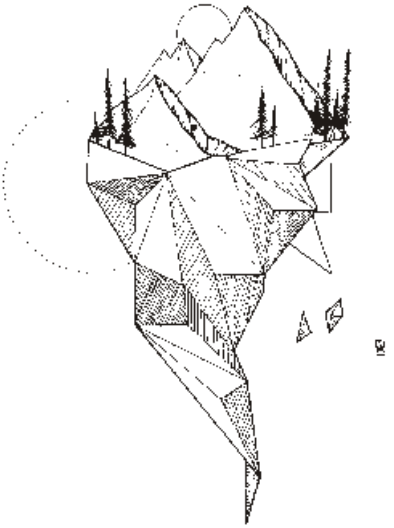

प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

प्रकाशक
राजस्थानी साहित्य-संस्कृति पीठ
राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803
www.rbhpsdungargarh.com

e-mail : rajasthalee@gmail.com
ravipurohit4u@gmail.com

ग्राहक शुल्क
पांच साल : 500 रिपिया, आजीवण : 1000 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

इण अंक में

संपादकीय

दिरीजणो ई चाईजै राजस्थानी नैं दूजी राजभासा रो दरजो — *श्याम महर्षि* — 3

कहाणी

कमरै री विदाई — *किरण राजपुरोहित 'नितिला'* — 4

फौजी — *पवन 'अनाम'* — 12

व्यंग्य

महानता अर नीचता रो गणित — *कृष्ण कुमार 'आशु'* — 17

विनोद-वारता

बस-स्टैंड पर — *नागराज शर्मा* — 19

धरोड़

विद्रोह अर विरोध री जुगलबंदी : रामदेव आचार्य री कविता — *कमल रंगा* — 22

हेमाणी

दो डिंगळ कवियां री विनोदप्रियता — *गिरधरदान रतनू 'दासोड़ी'* — 26

कवितावां

पाछणां री गंठड़ी / खांदा अर सिर / जीवता बाळण वाळां री लिस्ट / क्यांरा दलित हां — *रामस्वरूप किसान* — 33

मौत / म्हारी पांती रो सूरज / ठौड़ / सूखग्यो रूंख — *डॉ. रमेश 'मयंक'* — 35

मिनखां री बातां — *बी.एल. माली 'अशांत'* — 37

खुसी रो काळ / बीं सूं मिलणो — *निशांत* — 38

लिछमी रो अवतार / ममोलियो / भोळो-भाळो बाळपणो — *सुमन* — 39

सोचै मन में डीकरी / मांडणा / आसीस — मनोज चारण — 41

गीत

कठै छुप्यो नूर छै / मत बांटो मायड़ बाप रे — *जयसिंह आशावत* — 43

गजल

चार गजलां — *बनवारी ख़ामोश, चूरुवी* — 45

दूहा

राजस्थानी भासा — *कमलसिंह सुल्ताना* — 48

कूंत

जूण अर हूण री अबखायां सूं जूझती नारी री अन्यारी आस उघाड़तो उपन्यास : रात पछै परभात — *डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत'* — 49

समै का साचा दस्तावेजी संस्मरण : बै बी कांई दिन छा — मुकुट 'मणिराज' — 54

दिरीजणो ई चाईजै राजस्थानी नैं दूजी राजभासा रो दरजो

वैग्यानिक दीठ सूं सिमरध राजस्थानी भासा नैं संविधान री आठवीं अनूसची में सामल करण रै सागै इणनैं राजस्थान री दूजी राजभासा बणावण री मांग ई बरसां सूं उठती रैयी है। राजस्थान री मातृभासा हुवण रै लिहाज सूं ई उणनैं औ हक मिलणो वाजब है। राजस्थानी नैं राज्य री दूजी राजभासा बणावण री बरसां पुराणी मांग अबै सोशल मीडिया माथै मुखर होय'र साम्हीं आय रैयी है। इण रा केई कारण है।

राजस्थानी नैं दूसरी राजभासा बणावण सारू केंद्र सरकार री स्वीकृति लेवण री ई जरूरत नीं है। प्रदेस री विधानसभा में इण सारू विधेयक लाय'र राजस्थानी नैं दूजी राजभासा रो दरजो दियो जा सकै। केंद्र सरकार रै गृह मंत्रालय में अटक्यै राजस्थानी, भोजपुरी अर भोटी भासा री संवैधानिक मान्यता रै कैबिनेट प्रस्ताव रै बिचाळै राजस्थान री वरतमान सरकार आपरै बजट में राजस्थानी भासा रै संरक्षण अर संवर्द्धन सारू केई घोसणावां करी है। आं घोसणावां नैं देखतां राज्य रा मुख्यमंत्री अशोक गहलोत रो राजस्थानी भासा सूं लगाव सांपड़तै प्रगट हुवै। गहलोत सरकार ई बरस 2003 में राजस्थानी भासा नैं संवैधानिक मान्यता रै संकल्प रो सर्वसम्मत प्रस्ताव राजस्थान विधानसभा सूं पारित करवाय'र भेज्यो हो।

अब जद कै केन्द्र सरकार नूंवी शिक्षा-नीति रो प्रारूप त्यार कर रैयी है अर राज्य सरकारां सूं ई आप-आपरी शिक्षा-नीति तय करण रो कैयो है। अैड़ी स्थिति में राजस्थानी भासा रो राजस्थान में दूजी राजभासा रो दरजो घणो महताऊ पांवडो हुवैला। अबार राजस्थान री शिक्षा नीति में तृतीय भासा री ठौड़ उर्दू, संस्कृत अर पंजाबी विसय लियो जाय सकै, जको सरासर गलत है। इणी भांत राजस्थान में उर्दू अर संस्कृत रै पछै पंजाबी भासा अकादमी ई खुल चुकी है, जिणसूं आं भासावां री दखलंदाजी आवण वाळै बगत में बध सकै। पण नूंवी शिक्षा नीति रै त्हैत राजस्थान री मातृभासा राजस्थानी नैं तीजी भासा रै विसय रै रूप में लागू नीं करणो राजस्थान रै विद्यार्थियां सारू ठाडो अन्याव है। प्राथमिक अर माध्यमिक शिक्षा में राजस्थानी रो सम्पूर्ण प्रवेस राजस्थानी नैं दूजी राजभासा रो दरजो मिल्यां ई संभव है। इण वास्तै राजस्थान सरकार रो पैलो पांवडो औ हुवणो चाईजै कै राजस्थानी नैं राजस्थान री दूजी राजभासा घोसित करण सारू विधानसभा में विधेयक पारित करावै।

-श्याम महर्षि

किरण राजपुरोहित 'नितिला'

कमरै री विदाई

''औ देखो! ओ है म्हारै लाडलै देवरजी रो कमरो... सैं सूं चोखो कमरो... है नीं शिखा.. ?'' भाभीसा रै लाडलै देवरजी रो कमरो सैं सूं चोखो!... म्हारो कमरो सैं सूं चोखो!.... आऽहा! कितरा आणंद अर हरख देवण आळा है अै सबद। सोचतां ई वा खुसी सूं भरगी अर इण बात रै पडूत्तर मांय जेठाणी जी साम्हीं वा फगत लजखाणी पड़गी। कोई दूजो टैम व्हैतो तो वा बोल्यां बिना नीं रैवती, पण आज अपणै-आप नस छाती सूं लागगी। औ समै लाज सूं बेवड़ी होवण रो ईज है। परणियै फेरां री बींदणी रै इण लजखाणै रूप माथै तो देवता ई बळिहारी जावै। वै ई मिनख जमारै आयनै इण दिनां रौ आणंद लियां बिना नीं रैय सकै। जिण घर में नूंवी बींदणी कुंकुं पगल्या मांडै वो घर भागधारी व्है अर बडेरां री आसीस परवाणै अै दिन देखण नै मिलै। आज इण जगै ऊभी नै दादीसा रा अै बोल याद आयग्या। अैड़ा मिजाजी दिनां सूं पोमीजतो औ घर पुसप अर मिठायां री सौरम सूं महक रैयो है। परण्या फेरां री नूंवी ब्यावली बींदणी शिखा जांन रै पाछी आयां होवण आळी सगळी राह-रीत निवेड़्यां पछै सुहाग सेज रा सुपना सजायां उण थळगट माथै ऊभी ही जिण मांय प्रवेस सूं उणरो मधुमास सरू होवैला। उणरै सुपनां रो कमरो... सुपनां री सेज... सुपनां रो सासरो अर सुपनां रा ई साथी पिवजी। उठै ऊभी ई वा कमरा नैं अेक चोर निजर सूं देखणो चावती ही झट सूं। भाभीसा री बातां बिचाळै वा चोरी-चोरी कमरै रै अंग-अंग री तस्वीर आंख मांय उतारली ही। पिया सूं मिलण री उंतावळ ही, पण पैलां कमरै नैं देखण री खथावळ मन मांय जागी। वा उण तस्वीरां सूं कमरा रो मिलान करणो चावती ही, जिकी उणरी निजरां मांय, हिया मांय नलिन उगाई है।

ठिकाणो :
सी-139, शास्त्रीनगर
जोधपुर (राजस्थान)
मो. 7568068844

''हैं नीं... साच्याणी कितरो सोवणो... देखो हो बीनणी? ओ... ओ ...'' कैवतां वै खुद ही आपरै माथै अेक चपत मारी अर बोल्या, ''...म्हैं बावळी समझ ई नीं रैयी हूं। आजकालै तो व्हॉटसप सूं फोटुवां रा लेण-देण होवै है। बींदणी सा कदका ई कमरै रो इंटीरियर देख लियो व्हैला... साच कैवूं हूं नीं?'' कैवतां वै जोर सूं हंस्या हा अर केई डिबेट मांय धारदार बोलण आळी शिखा आज बारंबार लाज सूं बस दोवड़ी होवती जावै है। वा सोचण लागी कै आ बात इणां नै कीकर ठाह पड़ी! अर साच्याणी ई नलिन कितरी फूठरी-फूठरी फोटुवां शेयर करी ही। बदळै मांय वा ई आपरै नेन्हैक कमरै री फोटुवां मेली ही। अेक-दूजा सूं छेड़-मस्ती करी अर अेक दूजा नैं घणोई छकायो हो खुद रै कमरै नैं दूजा सूं चोखो बतावता। वै बातां याद आयगी शिखा नैं। भाभीसा सूं पैला दोय वार मिली है, पण फेर भी संको-सो आवै है आज... साची पूछो तो वा इण घड़ियां नैं अेक लजीली नारी दांई जीवणी चावै है। ना इंजीनियर शिखा, ना वाद-विवाद री तेजस्वी नारी। बस अेक फूठरी बींदणी जकी गैणां सूं लक-दक है। अबार तांई उणनैं फगत किताब, कॉलेज सूं ईज प्रेम रैयो है। ब्यांव सारू मां गैणां री डिजायन देखाई तद वा कम्पीटिशन री त्यारी मांय डूब्योड़ी ही। उणनैं नीं ठाह है कै कांई बण्यो, कांई घड़्यो, बेस री डिजायन-कलर सूं उणरो कोई वास्तो कोनी रैयो कदैई। सो-क्युं सुरभि ईज दाय करयो अर बणवायो। उणनैं अै चीजां आफत लागै हमेस सूं। पढाई सूं ईज फगत अेक प्रेम है अर पढतां, नौकरी करतां कद नलिन सूं प्रेम व्हियो, वा जाण ई नीं सकी। अर जागी तो फेरां री त्यारी होवती ही। पछै वा अेक न्यारै ई नसै मांय डूबण लागी जको प्रेम सूं ई कीं न्यारो-निरवाळो मनभरयो हो। दोनूं घरां री रजामंदी अर धूमधाम सूं अैड़ो ब्यांव! अैड़ै ब्यांव री कोई होड नीं कर सकै। सैकड़ूं लव-मैरिजां वारूं इण रीत-रिवाज आळै ब्यांव पर। शिखा औ सोचती रैयी हर रीत निभावण री वेळा। हरेक बात माथै नाक-भौं सिकोड़ण आळी रो औ गऊ रूप देखनै मां हैरान ही, पण मनोमन वारी जावती रैयी। रूप री रंभा शिखा, जिण री बुद्धि अर रूप रो कदरदान हर कोई हो। आज सगळा नलिन रै भाग नै सरावै है।

सुहाग सेज माथै बैठी शिखा नैं आपरै कमरै री याद आई अर आ सोचनै हरखी कै अब सूं औ कमरो ईज उणरो आपरो है। गुमेज हुयो खुद री इण नूंवी मिल्कियत माथै। पीहर आळो उणरो कमरो भलांई नेन्हो हुवो अर घर में लारलै पासै पड़तो हुवो, पण उणसूं ई वा घणी राजी ही। अेकर लारलै कमरै सूं निरास होयी, पण पछै दिन पर दिन उणनैं वो कमरो व्हालो लागतो गियो अर उण सूं प्रेम व्हैतो गियो। कीं दिनां पछै समझ आई कै घर रो लारलो नजारो निरवाळो ईज व्है जिणरो रंग पूरै घर सूं कीं दूजो व्है। अेकांयत रो कमरो जिण मांय वा सांयती सूं बैठी घंटां लग पढती रैवती। कोई हाको-दड़बड़ नीं सुणीजतो घर मांयलो। लारली लैण आळां रा सगळां घरां रो लारलो पसवाड़ो दिखतो लैणसर। वा सोचती कै घरां रो धकलो हिस्सो कितरो आडंबर सूं भरयो, थेथड़ियोड़ै फूठरापै रो व्है, जिणमें घर रै साचै रूप नै जोरां मरजी मांय धकेलनै रोड़ै, लुकोवै अर माथै कंगूरा बणावै, सजावै। छेकड़लो हिस्सो कितरो सरल, दुरावरहित

आपरै असली रूप मांय होवै। लारलै हिस्सै मांय जिंदगी रा सगळा चित्राम आपरै असली रूप मांय दीसै। धकलै आडंबर आळै रूप मांय कित्ती जेज रैय सकै मिनख! छेवट सगळा दिखावा त्यागनै असल रूप मांय आयनै जीव सौरो करै। अेक नूंवी ड्रेस दिखावा री व्है, पैरनै मिनख अधर व्है जावै। मनचायी हरकत करणै री अणदेखी पाबंदी लाग जावै। उण माथै किणी री पैचाण नीं व्है, पण रोज पैरीजण आळो पजामो-कुरतो आदमी री असली अर खुद री सौरम सूं लकदक रैवै। उणनैं पैरनै वो खुद नैं पूरंपूर फैलाय सकै। लारलै घर रै लोगां नैं अबै देखण लागी ही वा। घरां रै मेन गेट री कानी सदा ई आं बंगला मांय सून-सी रैवै या फेर कुत्तो लेय'र बैठ्यो गार्ड दीसै। फूठरा घरां में गाडियां ऊभी दीसै, पण लोग नीं। इण पॉश कॉलोनी रो औ हाल है कै पाड़ोसी सूं प्रेम तो अळघो, जाणै ई कोनी आपसरी मांय। पण वा लारै कमरै में आयां पछै दिन निसर्‌यां केई जणां नैं उणियारै सूं जाणण लागी। अचरज होवतो कै इत्ता साल अै सैंग कठै गायब हा? दिख्या क्यूं कोनी कदैई? केई दिनां पछै कोई-कोई सूं मुळक रो तांतो बण्यो। उणनैं भरोसो हो कै मुळक सूं अेक दिन मेळ होवैला। मुळक रै पुळ माथै हालतां पछै कैयां सूं हाय-हैलो, राम-रमी ई होवण लागी। पछै दोय साथणियां अैड़ी पक्की बणगी कै अेक दांत रोटी टूटण लागी। जिण बडै बंगलै नैं देखनै वा सोचती कै इण घर री छोरियां कीं दूजी तरै री परियां ज्यूं होवैला, पण साथणियां बण्यां पछै वै परियां प्यारी छोरियां ई दीसी, जिणां रो पालण-पोखण भलां ई नौकरां-चाकरां आळै घर में होयो होवै। इण रो जस वा उण लारलै नेन्है कमरे नैं देवै। माथौ झाटकनै वा विचारां री घाण-मथाण में गुम होवण री आदत सूं बारै आवण री खेचळ करी। इण अणमोल समै रो आस्वादन इयां कियां लारली बातां मांय गुम होयनै कर रैयी है? खुद माथै हंसी आई। औ समै सुखमय जूण री कल्पना रो है। लांबी उडीक रै पछै औ दिन ऊग्यो है अर वा आपरै कमरै मांय उभी है। उणनैं मां रा बोल याद आया, ''लुगाई रा दो-दो घर व्है सकै अगर दोनूं घरां रा मिनख चोखा व्है अर लुगाई रै मन री गत कीं समझता व्है तो, नींतर अेक ई घर उणरै पांती नीं आवै। सदा घर सारू तरसै।'' ...पण वा चोखा मिनखां रै बिच्चै आई है अर औ कमरो ई उणरो आपरो निजू है। आज उत्ती ईज राजी है, हरखै है जित्ती दसवीं बोर्ड री टैम मां उणरै सावळ पढाई करण सारू लारलै छेड़ै रै स्टोर नै झाड़-बुहार नै शिखा रो कमरो होवण रो अेलान कर्‌यो हो। उण घड़ी मां कोई साम्राज्ञी लागी ही, जिणरो आदेस कानून व्है। न्यारो कमरो मेधावी शिखा नैं परीक्षा रै परिणाम सूं पैला रो इनाम हो। उणरै रिजल्ट माथै कोई नै व्हैम नीं रैवतो। सदा ई अव्वल रैयी। इंजीनियरिंग पूरी होवतां ई जॉब अर पछै सागै दूजा कम्पीटिशन री त्यारी करतां अै सुभ दिन अर औ सुभ स्थान। सो-क्युं मनचायो देय दियो ईश्वर। वा दोय घड़ी आंख्यां मींच नैं ईश्वर नैं धिनवाद दियो। ...नैड़ी आवती पगां री सरसराटी सूं वा आंख्या खोल दी अर लाज रै मारै औरूं सांवटीजनै बैठी।

...नेड़ै दिनां रै होयै ब्यांव री सौरम घर मांय सूं झर रैयी है। घर रै बारै सामान अर बिखरी कनातां सूं लागै कै घर अजै ब्यांव मांय मगन है। नूंवी बींदणी घर मांय रुणक-झुणक

चालै अर उणरो मोहक रूप घर माथै दीसै। घर राहगीरां नैं आपरो औ सुख बतायां बिना नीं रैवै अर वै मुळकता बधाई दियां जावै। मिठायां अजेस ई रसोड़ा मांय डेरो जमायी बैठी है। शिखा री खासी अपणायत जुड़गी है आयोड़ी बैन-बायां सूं। कीं सांयनी है, कीं बडी, पण सगळी प्यारी लागै। फगत हंसी-हथाई अर जीमण मांय ईज समै बीत रैयो है। दूजी अबखायां-चिंतावां नैं दोय दिन सारू बिसार दी है। ब्यांव पछै री हथाई मांय ब्यांव कैड़ो रैयो, कांई बातां व्ही, घटनावां व्ही, कुण कांई पैरयो, कुण कैड़ो लागतो, कैड़ो नाच्यो अर कीकर, रीत-रिवाज कैड़ा निन्या, आं सगळी बातां पर हळकी हंसी भरी चरचा चाल रैयी ही। बिच्चै तेज ठहाका गूंज रैया है। शिखा ई झीणो घूंघटो काढ्यां, थोड़ो-सो ओटो लियां बैठी है। सुणै है। बातां-बातां मांय बात री ल्हैर सुहागरात आळै कमरै री सजावट तांई पूगी। नीलिमा बाईसा गरब सूं भरनै कैयो, ''कमरो म्हैं सजायो अर सबसूं बत्ती मैणत म्हैं करी। दूजा सगळा तो बस यूं ईज दिखावटी रा हाथ राखै हा।'' मूंडो मचकोड़तां आपरी बात पूरी करी। सगळा हां में हां मिलायी, पण जेठुतो निक्कू बीचै कूद पड़्यो... बोल्यो, ''अरे भुआसा कूड़ बोलै है। अै तो मोबाईल पर होवण आळा फूंफोसा सूं बातां करता रैया हा। साची मैणत तो म्हैं करी ही...।'' कैवतो थको आपरै भुआसा साम्हीं जीभ काढनै चिड़ावतो भाजग्यो अर भुआसा थोड़ा चिड़ता अर थोड़ा लाज भरी खीज अर दिखावटी रीस लियां उण लारै भाज्या जाणै अठै सगळां रै साम्हीं अबै कोई तरै सूं ऊभणो दौरो व्हैग्यो व्है। जठै शिखा बैठी ही, उठा सूं साफ दीसग्यो कै स्यात इणी बीच कोई कॉल आयो हो अर भुआसा भतीजा लारै नीं, बल्कै दूजा कमरा मांय वळग्या है। उणरै उणियारै मुळक आयगी—भतीजा रै भुआसा री वा खीज अर रीस भरी हालत जोयनै। औ सोचनै जीव सौरो करयो कै वा अैड़ै परिवार मांय पग धरयो है जिण मांय आधुनिक चीजां रै साथै संस्कार ई उत्ता ई अनुपात रूप मांय मौजूद है। उण रा नणद कॉलेज में है अर उण सूं नेन्हा है, सो उणनैं साव टाबरी लागा। उण मांय नणद रै खातर भाभीसा होवण रो भाव वापरियो अर सोच्यो कै नणद रै साथै हमेस प्रेम भरयो वैवार राखूंला। सोचती निरांत री सांस ली। शिखा घर मांय सगळां सूं नेन्ही है अर नेन्हां रै जीवण सूं बाळपणो कदैई जावै ईज नीं। नेन्हा गिणीजता-गिणीजता बूढा व्है जावै पण बडां सूं नेन्हा सदा नेन्हा ईज रैवै। इणी कारण नेन्हपणै रो भाव कायम रैवै अर बडा! छोटै भाई-बैन रै आवतां ई बाळपणै सूं ईज मोटा होवण रा ठोला दीरीजण लाग जावै, भलांई उमर अर अनुभव मांय कम ई क्यूं नीं व्हो... भुआ-भतीजा री हंसी-बंतळ देखनै उणनै पीहर री ओळूं आयगी। उठै होवती तो अबार तांई तो वा ई अैड़ी मस्ती मांय भेळी भिळ जावती। पण इण समै तो वा... वा टगमग जोवती-सी आपरै बाळपणै मांय पूरी पूगी ही कोनी, जित्तै ई कोई हेलो करयो, ''...नलिन रै कमरां सूं दरियां ले आवो बींदणी!'' दो छिण पछै ठाह पड़्यो कै औ काम उणनैं ईज भोळायो गियो है। भळावण आळा भुआसासुजी हा अर ऊपर री ओर हाथ सूं सानो करतां वां बात पूरी करी, ''...दरियां कम पड़ै... नलिन रै कमरै मांय पछीत माथै पड़ी है।'' पछै कीं सोचतां थका बोल्या, ''का स्यात अलमारी रै लारै ई पड़ी व्है

सकै... थे सोधनै ले आवो नूंवा बींदणी सा... म्हनैं सावळ बेरो कोनी कठै पड़ी व्हैला दरियां।'' बडोड़ा बाईसा नीलम चाणचक ई बोल पड़्या, ''अरे भुआसा, भाभीसा रो आपरो कमरो है ...भाभीसा खुद सोधनै लेय आवैला।''

''अरे! भाभीसा रै कमरै सूं कांई मतळब! अजै आयां नै चार दिन ई नीं हुया अर नलिन रो कमरो इयां रो कीकर होयग्यो...'' वै हाथ सूं बूझता कमर माथै हाथ दियां बोल्या। सुण'र शिखा माथै नैं ओर हेठै कर लियो। नलिन भुआसा रै सुभाव री बात बतायी कै थोड़ो-सो आकरो सुभाव है... बाळविधवा है अर अठै ईज सालां सूं रळ्या-मिळ्या है। इण कारण म्हांनै पराया नीं लागै। बडेरा है अर सगळां रो लाड राखै... शिखा! आपनैं ई घणोई हेज देवैला... बस थोड़ो धीजै सूं सांवटणो पड़ैला भुआसा रै हेज नैं।'' अर साच्याणी आं दिनां मांय आकरै सुभाव रा लक्षण कीं नीं दीस्या भुआसा रा। पण हां, बोलणै अर हाका करणै रो सुर थोड़ो-सो तार सप्तक नैं डाक जावै, पण फेर ई रीस नीं आवै, क्यूंकै जीव रा काचा है। पण अबार कैयोड़ी भुआसा आळी आ बात सीधी हिया मांय लागी शिखा रै। इत्ता जणां बैठा हा, पण उणां नैं इण बात रो कोई पडूत्तर नीं दियो।

शिखा बोलीबाली उठी अर चाल पड़ी आपरै कमरै कानी ...ना ...ना...नलिन रै कमरै कानी। नीलम बाईसा, भाभीसा साम्हीं स्याय भाव सूं लगोलग जोवै है। शिखा मैसूस कर्‌यो... नीलम परण्योड़ा है, समझै अेक बींदणी रै काचै हियै री बात नैं। शिखा मन मांय थैंक्यू दियो बाईसा नैं।

सिंझ्या रा ब्याळू री वेळा टेबल माथै गरमागरम भोजन सजाय रैयी ही। नलिन दोय बार आयनै मसखरी करनै गया है। अेकर छेड़तां थकां आंगळी मुड़ता पूरै डील रो यूं टल्लो दियो कै वा झेंपगी लाज रै मारै। पण आपरै काम मांय लागी रैयी। भुआसा किणी टैम आय सकता हा। पण नलिन री हिम्मत बधती ही जाय रैयी ही अेकांयत देखनै। अठी-उठी जोयनै फुसफसावतां कैयो कीं... वा नासमझ-सी साम्हीं जोयो तो ऊपर कानी सानौ कर्‌यो अर बोल्या, ''भोजन में अजै टैम है... अेकर ऊपर आ जाओ...प्लीज।'' कैवतां अेक न्यारै अरथ मांय मुळक्या अर आंख्यां सूं इसारो कर्‌यो। लाजां मरती वा दिखावटी आंगळी सूं ना रो झालो दियो अर काम मांय लागण रो दिखावो कर्‌यो। कनखियां सूं जोयो... नलिन गया परा है वठै सूं... उणनैं चोखो नीं लाग्यो जावणो। वा काम में लागण लागी ही कै पट सूं उण कनै भाटो आय पड़्यो व्है ज्यूं बाज्यो। अचंभै सूं जोयो तो कागज जैड़ो कीं दीस्यो। ...ओऽहो लवलैटर... प्रेमपाती... मधुयामिनी रै रंग सूं सरोबार शिखा पिया री पाती अेक सांस मांय पढली। वा गुलाब रै पुहुपां जैड़ी लिखारी... अर उणियारै रा वै भाव बेरंग व्हैग्या :

''...ओ म्हारी जीव री जड़ी... थांनै काम री पड़ी... तरसै थांरा पियाजी... म्हारै कमरै कानी... थोड़ा आवो तो सरी... फगत शिखा रो नलिन...'' पछै दिल रा केई निसाण... प्यार री इमोजी सूं पुरजो भर्‌यो हो। अेकर पाछो बांच्यो... तीजी बार बांच्यो... बारंबार बांच्यो... पण

'म्हारै कमरै कानी' रा सबद उणरै प्रेम री ताब नै ठाडो कर दियो। बची सगळी लैणां उठां सूं मिटगी अर फगत अेक ईज लैण दिखती रैयी... 'म्हारै कमरै कानी'। कोई रै कनै आवण री सरसराट सूं वा संभळी। प्रेमपाती नैं कागज ज्यूं मुट्ठी मांय दबाई अर पैलां दांई काम करण लागी। कीं घड़ी पैलां रौ प्रेम रो सरोबार अब मधरो व्हैग्यो हो। हाथां मांय काम हो, पण मानस मांय केई घमसाण हा। पापा-मम्मी तो सगाई होवतां ईज नलिन नैं बेटो मान लियो हो। अमूमन औ ईज कैवता, ''नलिन बेटा! औ घर जित्तो शिखा रो है उत्तो ई आपरो भी है। रिलेक्स होयनै आवणो-जावणो... आप भी तो अब बेटा जिसा होया हो। चार मांईता रा बेटा हो।'' कैवतां थकां हंसता तो नलिन रै उणियारै सौरप रो भाव वापरतो। पण अठै आयनै लागै है कै अजै जूनै जमारां दांई या किताबां-कहाणियां, अखबारां दांई आ इबारत खारो साच है कै ''जुगां-जुगां सूं नारी उणी ठौड़ ऊभी है... कित्ती ई क्रांतिया होवो, आधुनिक होवण री बात, स्वतंत्रता री बात होवो, छेकड़लौ बिंदु औ ईज होवै कै अेक लड़की रो आपरो घर कदैई नीं होवै। पैला बाप रै, जवानी में पति रै अर अर बढ़ापै मांय बेटां रै घरै रैवै।'' हुंह..., उणनै घूंघटा सूं अमूझणी आवण लागी। दागिणा चुभण लागा। रेसमी पोसाक मांय घुटण होवण लागी। चुड़ला मांय कसमसाट मचण लागी। खुद माथै निजर न्हाखी। इण बगत बदन माथै हर निसाणी ब्यांव री है। ब्यांव री निसाणी है कोई मन अर घर री धिराणी बणनै री। पण इण घर री बात-बगत कीं दूजो सानो करै। ...जीव मांय बळत अर अमूझणी बधती जाय रैयी ही... उणी टैम खुद रै आसै-पासै उणनैं निंवायो घेरो-सो कसीजतो लाग्यो... कानां कनै कीं उन्ही-उन्ही उसांस मैसूस व्ही... जीव रै घेरा सूं बारै चेतो आयो अर जोयो तो ठाह पड़्यो कै ओ नलिन री मजबूत बाथां रो घेरो है, जको आज उत्तो मजबूत नीं लाग्यो जित्तो हथळेवा री बगत वा मैसूस कर्‌यो हो। कीं निरबळ अर अजाणो-सो लाग्यो... बीजी कोई टैम व्हैती तो वा इण घेरा रो पड्डुत्तर उणसूं दस गुणा तेजी सूं देंवती पण... वा इबारत आंख्यां धकै है अजै... मानस में है। अणमणी-सी व्ही। अेक मन कर्‌यो कै उण बाथां मांय दोवड़ी व्है जाय, पण यूं नीं हुयो। मन सूं उपरै कोई चीज ही जिको उणनैं रोक ली अर वा नलिन साम्हीं देख्यां बिनां ई बरतणां नैं आगा-पाछा करण लागी। उणरो मनचायो रेस्पोंस नीं देखनै दोय छिण अडीकनै नलिन हवळै-हवळै गया परा। उणनैं औ ई चोखो नी लाग्यो। वा उदास व्हैगी।

...बगीचै मांय मंड्योड़ी चंवरी रै च्यारूंमेर सूखा पुहुप पड़्या है। पन्नियां री लैणां, झालर कठै-कठैई अजै लटकती ही। पूरै घर रो ईज ब्यांव होयो है जाणै। ब्यांव री पिनक मांय घर अजै मदहोस है। सगळा रिस्तेदार गया परा। भुआसा मां रै बंतळ सारू रुक्या है। भुआसा अेक पीढी पैलां रा बेटी है जका आपरै जूना दिनां नैं याद करता बाळपणै सूं जवानी अर अबै प्रौढ़ता री वयस तांई पूगग्या, पण अठै आयनै पाछा टाबरपणो मैसूस करै। बडा भाईसा अबै उणां रै पिता दांई वैवार करै। जिम्मेवारी भर्‌यो सासरै रो घर केई वार याद आवै, पण उणनैं बिसारनै कीं गिणमा दिनां सारू बाबोसा रै आंगणै री चिड़कली पाछी आपरै रंग में आय जावै।

पूरो परिवार पलक पांवडा बिछायां शिखा नैं उडीकै हा। गाडी ढबतां ई वा उतरी अर मां रै कानी लपकी। लारलै दस दिनां सूं गज भरया घूंघटा मांय दबी शिखा नैं अबै माथै री ओढणी रो ई ख्याल नीं रैयो। साच्याणी ई वा मां रै आंगणै री चिड़कली है। चिड़कोली रै पगां मांय पायजेब अर बिछुड़ियां री रुणझण बाजै है। पण अठै वा बायरा सूं ई हळकी है। बाबोसा रो आंगणो कांई चीज है वो आज उण सूं पूछै कोई... सेमिनारां में सामाजिक विसय पर पत्रवाचन करणो, धुंआधार बोलणो, तर्क-वितर्क करणा अर उणनैं इण रूप सूं साचै जीवण मांय कितरो आंतरो है, साव न्यारो है। औ आज मैसूस करयो है वा। आवतां ई सबसूं खूब मिली, जाणै केई जुगां सूं देख्या है सगळां नैं। मां री भेदभरी दीठ केई वार उण पर आवती दीसी, पण वा इन्नै-बिन्नै देखनै बिसराय देंवती। मां म्हारै मन री बात पढली कांई? आखती-पाखती आळी काकियां-भाभियां आज कीं न्यारै भांत री अपणायत सूं मिळी। घणी बातां करी। सगळा उणनैं चोखै अमीर घर री बहू बणण सारू ईसका भरी निजरां सूं देखता भाग नैं सरावै हा। पण उणरै मन मांय कमरै री सळी फंस्योड़ी ही। वा कीं सोचणो नीं चावै इण बगत। आपरै घरै आई है दस दिनां पछै। गैणां-गांठां अर फूठरा गाभा-लत्तां सूं लदी-फदी है। आज घर नैं देखण रो नजरियो दूजो है। रसोई, चौक, बरामदो, साळ-पौळ हर जगै नैं देखती वेळा जीव केई बातां मांय गम्यो रैयो। इणी रसोई मांय रात्यूं मैगी बणाई है सहेलियां साथै इयरफोन लगायनै... रसोड़ा रै प्लेटफॉर्म नैं स्टेज माननै केई परफॉरमेंस दी है। पण आज रसोई मांय आयनै ऊभी तो अपणेस सूं साम्हीं भाजनै नीं आई बल्कै बोलीबाली ऊभी रैयी। सदां दांई रसोई मां ज्यूं नीं लागी। रसोई रो औ वैवार सुहायो कोनी अर ना अैड़ी आस ही। घर दांई ई रसोई उणनैं छाती सूं चेप लेवैला अैड़ी आस ही। वा मुड़ी तो रसोड़ो झाला देयनै रोकी कोनी, मनवार नीं करी... यूं क्यूं मोह छोड दियो। चौक मांय आई तो उणरी आहट सूं चिड़कल्यां उडगी। वा रोकणी चावै पर रुकै नीं। बरामदै री कुरसी आज ई सदा दांई सरण दी। उणरो जीव कीं सोरो हुयो। घर री हरेक चीज रो वैवार अजब लखायो। पोळ तो सदा सूं ई मैमान-पांवणा रो कमरो रैयो है, जिण मांय केई भांत रा रंग है। उण सोफा पर जायनै कीं ताळ माथो टिकायो तो ठंडो बायरो आयो अर वा ढीली होयनै पसरगी। कीं ताळ आंख्यां मींचनै दिमाग नैं खुल्लो छोड दियो। जठीनै जावणो चायो जावण दियो। मन री ल्हैरां कठैई जायनै टकराई अर वा झटकै सूं उठी अर भाजती-सी घर रै लारलै पसवाड़ै गयी। नाळ नीचै पड़्यै बक्सै मांय ओढणो अड़नै चर्रर्रर्र करतो अटकतो, रोकतो-सो फाटग्यो किनारै सूं । पण उणनैं परवाह नीं है कै ओढणा नैं छोडावै। वा भाजती-सी आपरै नेन्है-सै कमरै रै पलंग माथै जाय ऊंधी पड़ी अर तकियै नैं माथै पर राख लियो। केई गतागम मांय पजियो जीव भंवतो रैयो। जीव कीं ठाणै पड़्यो तो तकिया नैं होळै-सी सरकायो अर सीधी होयनै पंखै माथै निजर अटकायी। आपरै कमरै नैं अेकदम आंख्यां खोलनै नीं देखणो चावती ही। अपणेस रो अठै खजानो है। कमरै री गोदी में आयनै वा अेकर पाछी वा ई चंचल शिखा बण सकै। पंखै सूं निजरां फिसळनै भींता माथै सरकती परदां तांई पूगी। अरे वाह! नूंवा

परदा! पण औ रंग म्हनैं दाय नीं है, सगळा नैं ठाह है तो पछै अैड़ा क्यूं लगाया? कुरसी-टेबल दूजी कानी ट्यूबलाईट रै अेन नीचै हा। वा चौंकगी। वा हमेस कुरसी-टेबल गोखै रै कनै राख्या। भरपूर च्यानणै मांय पढणो, स्कैच बणावणो अर चिड़ी-रूंख नैं देख'र कवितावां लिखणो उणरो चाव है। किताबां री रैक मांय किताबां री सूरतां निकेवळी अर अणजाण-सी ही। शो-केस खासो खाली हो। उण रा मनपसंद एंटीकपीस अर एक वॉटरकलर री पेंटिंग उठै नीं ही। तेजी सूं पेंटिंग बणावतां उणरी आंगळ्यां री कलाबाजियां शिखा नैं अणूती दाय ही। क्लास रै आखरी दिन मांय उणनैं साम्हीं बैठायनै पेंटिंग बणायी ही। वा कितरी खुस ही कै उणरो पोट्रेट बणावै है। पेंटिंग पूरी होयां पछै वो उणरी आंख्यां पर हाथ राखनै उदास होवतो हाथ मांय पकड़ाई ही अर ताकीद करी ही कै धकलै दस मिनट तांई आंख नीं खोलै। वा पोट्रेट री कल्पना मांय मगन रैवती कीं सरसराट मैसूस करी, पण आंख्या नीं खोली। कीं ताळ पछै जोयो तो देख्यो कै... सिंदूरी आकास मांय अेक चिड़कली उडै है। ठेठ अळगै दोय रूंख चुपचाप ऊभा है। अेक हरयो पत्तो जमीं माथै आवण सारू झूल रैयो हो। अेक कानी केई रंगां रा गुच्छा हा। अेक कानी अेक खिड़की जिण रा दोनूं पल्ला आधा उघड़्योड़ा हा। वा अचंभै सूं उणनैं पूछणो चायो तो वो उठै नीं हो। रंगां सूं उणरो सागो उण दिन पछै कमती होवतो गियो अर वा पढाई मांय खपती गयी। आज कितरां दिनां पछै उणरी याद आई। अेक टैम हो जद उणनैं देख्यां बिना अेक घड़ी नीं रैवीजतो। ...उणरै माथै सळ पड़ता जावै है। वा उठनै देखणी चावै पण उठीजै नीं। इण बदळाव सूं थिर व्हैगी है। भींत माथै बणी-ठणी री पेंटिंग देखनै ढबी। अेक सांस आई। पण लाग्यो कै वा आपरै कमरै मांय नीं है। ना वो कमरो उण मांय है। बरसां सूं जिण चीजां री जग्यां रो आंख्यां सूं नाप लिरीजग्यो हो, वो अनुपात अब दूजो हो। कसक-सी उभरी अर उण बदळ्या कोण रो नाप जोवण लागी जको उणरै खांचै मांय फिट नीं हुयो। जोड़-बाकी, गुणा-भाग आवण-जावण लागा। आंख्यां री कोरां गीली होवण लागी। अेक अमूझ-सी आई अर वा कपड़ा बदळनै सारू बेकरार व्ही। गैणां खांचनै उतार्या अर झट अलमारी खोलनै नाइट-सूट पर हाथ घाल्यो... वो नाइट सूट सुरभि रो हो। दूजी ई घड़ी आंसू सागै अंगारा बरसण लाग्या। मन जोर सूं रोवण रो हुयो हो, पण मूंढै नैं काठौ भींचनै फगत बोल सकी... ''मांऽऽ'' अैड़ी रोयोड़ी तेज पुकार सुणनै मां भाजती आई अर बेटी नैं रोवतां देखनै घबरायगी। वा घणी कोसिस करी कै आवाज नैं नीची राखै, पण नीं रैयी, ''मां... म्हारा कपड़ा कठै... किताबां... पेंटिंग... सगळा कठै... सगळा कठै है मां... ?''

औ सीन होय जावैला उणां नैं अंदाज नीं हो। आंख्यां नीची होयगी। मां बिना बोल्यां होळै-सी आंसू पूंछती बारै निसरगी। पापा हाकबाक ऊभा रैयग्या।

'' जीजी... आपरो सामान नाळ हेठै राख्योड़ो है... म्हनैं कमरै री जरूरत ही... सगळा कैवै शिखा अबै आपरै घरै गई।''

⌘⌘

पवन 'अनाम'

फौजी

आज ढाणी मांय नेन्है-सै टाबर री किलकारी गूंजी ही, खेत मांय खड़ी गेहूं री फसलां औस सूं न्हायोड़ी दिनूगै पैली लील मारै ही। सूरज देव पूरा आपरै चरम पर नीं हा, किरणां री तपत बेसी कोनी ही, ठंडी-ठंडी पून सूं हालता सगळा दरखत इण भांत दीखै हा, जाणै नूंवै मेहमान रै आवणै रो चाव आंनै भी घणो हो। छात री मुंडेर माथै सोन चिड़कली चीं-चीं कर'र टाबर री किलकारी साथै आपरो सुर मिलावै ही, आंगणै सूं दसेक पांवडा दूर बाखळ मांय सईका सूं खड़्यै 'लेसुए' रै रूंख री ऊपरी डाळी पर बैठी कोयल सुरीला गीत गांवती सुणीजै ही। आज रावताराम चौधरी री ढाणी मांय पैली बारी किणी टाबर री किलकारी गूंजी ही। सजना देवी अर रावताराम चौधरी रै ब्यांव रै केई बरसां बाद आज भखावटै औलाद बापरी ही। दोनूं मोटियार-लुगाई सूनी गोदी सूं पिंड छुडावण तांई बापड़ा हरमेस कोई न कोई जतन करता रैया। ढाणी सूं गुजरण आळै किणी जोगी, महात्मा नैं खाली नीं जाण दियो, आसै-पासै री ढाणी मांय दाणा लेय'र जद कोई जोगी, महात्मा रावताराम चौधरी री ढाणी सूं बिना दाणा लेय'र खासा दूर चल्यो जावतो तो रावतो चौधरी पगां मांय उल्टी-सुल्टी जूती पैरतो, खूंटी टंग्योड़ै साफै नैं मोढां पर लेय'र बीं रै लारै जावतो अर आपरै घरां लावतो। घणा सारा जोगी, फकीर तो रावतै चौधरी रा तकड़ा बेली बणग्या हा, केई बार बै रावतै री ढाणी मांय ही रोटी खावता अर तावड़ै-तावड़ै बठै ही आराम करता। रावताराम चौधरी रै धन री कोई कमी नीं ही, झोटै रै सिर जियां पाणी री जमीन किला चाळीस ही। चौथिया-पांचियां ऊपर रो ऊपर ई काम सांभ लेंवता, कदैई किणी चीज री कमी नीं हुई। फगत कमी ही तो अेक औलाद री ही। रावतो चौधरी लोगां रै नेन्हा-नेन्हा टाबरां नैं

ठिकाणो :
गांव-बरमसर
जिला-हनुमानगढ़ (राज.)
मो. 9549236320

आपरै बाप री मूंछ्यां अर मोडां ऊपर किळोल करता देखता थकां सोचतो कै कदैई इण भांत म्हारी गोदी अर मोडा ऊपर ई म्हारो टाबर खेलैलो, उछळकूद करैलो। इण ख्याल सूं ही रावतै रो काळजो तपती बाळू रै ऊपर बिरखा रै मिस ठंडो हुय जावतो। जोगियां, महात्मावां नैं कदैई आपरो हाथ, तो कदैई आपरी जोड़ायत रो हाथ दिखावतो पूछतो, ''रे म्हाराज जी, म्हारै हाथ मांय औलाद री रेखा है कै नीं?'' अर जोगी माथै मांय तोरी बणा'र इण भांत देखतो जाणै तीनूं लोकां रो जाणैजाण है। खासा देर पछै हाथ नैं आगै लारै कर'र बोलतो, ''चौधरी सा, थे चिंता ना करो, थांरै हाथ मांय औलाद री रेखा घणी लंबी अर जमा साफ है।'' हथाळी रै मांय बण्योड़ै चांद कानी आपरी आंगळी करतो जोगी रावतै री आंख्यां मांय देखतो अर उणरै उणीयारै री रंगत नैं देख'र राजी हूवतो कैवतो, ''अगले साल आवूंला तो थांरी गोदी मांय टाबर होवैलो, आ बात पकायत है, जोगी रा अै बोल रावते रै हियै मांय मिसरी-सी घोळता अर हरख मांय ऊभो होय'र कमरै री पोळ्यूं सूं आपरी जोड़ायत नैं म्हाराज जी रै जीमण री व्यवस्था सारू कैवतो। घणै लाड-कोड सूं सजना देवी आपरै चूल्है ऊपर कड़ाई टेकती, रसोई सूं देसी घी रै डब्बे नैं उठा'र लावती, डब्बै ऊपर कृष्णजी रै बालपणै री फोटो नैं देखती-देखती आपरै टाबर री कल्पना मांय रम जावती। सीरो बणा'र रावतै नैं हेलो पाड़ती। रावतो हुक्को पींवतो अेक सूट और मारयां पछै धूंवो उडावतो नड़ी जोगी कानी करतो आंगण कानी ब्हीर हुय जावतो। चटकै-सी भोजन लावतो अर चाव सूं म्हाराज नैं जीमावतो। आथण म्हाराज नैं कांकण तांई छोड'र आवतो। आज रै दिन रावतै चौधरी नैं मैणत रो फळ मिल्यो हो। आ चायै संजोग मानल्यो चायै जोगी री भविसवाणी री नियति, रावतै चौधरी री सूनी गोदी हरी हुयगी ही। बांरै छोरो हुयो हो। बो ई गंठीली काया अर दोलड़ा हाडां रो पूरो-पाठो।

रावतो ढाणीयां मांय घूम-घूम'र लाडू बांटै हो। उणरी जोड़ायत कांसी री थाळी बजावती लुगायां साथै बतळ करै ही। छोरे रै नांव रो मुहूर्त पूछण बेई दूर गांव मांय बामण दादै कनै रावतो खुद गयो हो। बामण दादो दूसरो दिन नांव रै वास्तै सुभ बतायो अर काल दिनूगै चटकै आवणै रो वचन दियो हो। नांवकरण री सगळी सामग्री रावते रात ही ल्या दीन्ही ही।

बामण दादो दिनगै आयग्यो। आंगणै मांय नांव रै रस्म सारू सगळी व्यस्था करी। रावतो चौधरी अर उणरी जोड़ायत नूंवा कपड़ा पैर'र टाबर नैं गोदी मांय बिठायै बामण दादै रै सारै बैठ्या हा। आज केई सालां री तपस्या पूरी हुई ही, दोनूं घणा राजी हा। बामण दादै टाबर समेत दोनुवां रै रोळी रो तिलक करयो अर मोळी हाथ रै बांधी। आपरै झोळै सूं पोथी निकाळी अर देख'र बोल्या, ''चौधरी सा, थांरै टाबर सुभ घड़ी मांय जलम्यो है, शनि अर मंगळ दोनूं आपरै घर मांय है, ग्रहां री दिशा अेकदम सही है। इण घड़ी रो मौरत कम ही आवै है, पंडत जी री बातां सुण'र दोनूं मूळकता थकां गोदी मांय आंख्यां मीच्यां सूत्यै टाबर रै उणियारै नैं निरखण लाग्या।

आज रै दिन ई गंगा माई नैं आपरै तप अर जप रै बळ सूं धरती पर उतारण आळै महा तपस्वी 'भागीरथ' रो जलम हुयो हो। इण सारू थांरै टाबर रो म्हैं नांव राखूं हूं—भागीरथ।''

पंडत जी री बातां वांरी निजरां टाबर सूं तोड़ी अर भागीरथ नांव राख्यां पछै दोनुवां आपरै टाबर कानीं अेक निजर फेरूं मारी। पंडित जी ऊभा हुयग्या, भागीरथ नैं उणरी मां भीतर लेयगी— ''म्हारो भागीरथ'' हळकी-सी आवाज मांय सजना चालती बोली। पंडत जी नैं रावतो कमरै मांय लेयग्यो, रोटी-पाणी जिमा'र दान-दक्षिणा देय'र पंडत जी नैं आपरी मोटर सूं छोड दीन्हो।

भगीरथ नैं सगळा खिलावता। पैली लाडेसर औलाद नैं हरमेस रावतो गोदी राखतो हो। सगळा खूब लाड-दुलार करता। उणरी मां भैंस रो काचो दूध पावती, दूध पीवतै भागीरथ नैं देखतां रावतो चौधरी बोलतो, ''छोरे रै खाण-पीण मांय कमीं ना राखी, मेरो बेटो फौजी बणैलो फौजी, आपणै देस री सेवा करैलो।'' इणरै बाद दोनूं भागीरथ कानी देख'र हासण लाग जावता।

इण लाड-कोड मांय केई साल बिताया। आज भागीरथ रै भाई जलम्यो हो। रावतै चौधरी री दूसरी औलाद ई अेक छोरो हो। भगीरथ रो नांव ढाणी रै सारै ई प्राथमिक स्कूल मांय लिखवा दीन्हो हो। भणाई रै मांय भागीरथ सै सूं ऊपर ई रैयो हो। इण क्रम मांय इंटर क्लास पास कर लीन्ही। तद पछै फौज मांय भरती करण सारू रावतो चौधरी उणनैं स्हैर मांय फौजी ट्रेनिंग कैम्प में छोड'र आयग्यो। उण ट्रेनिंग मांय सब सूं ऊपर नंबर भागीरथ रो ई रैयो हो। तकड़ै सरीर रो धणी भागीरथ सगळा नूंवा भरती होवण वाळा छोरा सूं अलग ई दीखै हो। अफसरां भागीरथ नैं फौज मांय भरती कर लीन्हो अर उणरी वर्दी पर नाम लिख दियो— भागीरथ चौधरी। आज केई साल पछै रावतै रो देख्योडो वो सुपनो साच हुयग्यो हो। सुपना साच हुवणो तारे साथै सूरज ऊगण रै भांत होवै है।

रावतो राजी होय'र आपरे भागीरथ नैं बांथ मांय भर लीन्हो। सगळी ढाणियां मांय आपरै फौजी बेटै री बडाई करतो घूमै हो। भागीरथ नैं सगळा घणी बधाई दी। अब भागीरथ फौज सारू आपरौ समान बांध्यो। बो मां-बाप रो आशीर्वाद लेय'र ब्हीर हुयग्यो हो। भागीरथ कदी घर सूं बारै नीं गयो हो, इण सारू सगळा रो मन दुखी तो हो, पण फौज रै नांव सागै दुख अंजस री ओट मांय छुपग्यो हो।

भागीरथ रै फौज में भरती होवण रै कीं महीनां पछै भारत-चीन रो जुद्ध छिड़ग्यो हो, इण जुद्ध सूं कुण अछानो है। पूर्वोत्तर भारत रै केई राज्यां में भीसण मारकाट मची ही। पहाड़ां सूं घिरयोड़ी कुदरत री हरियाळी लोही सूं लाल हुयगी ही, भारत री पूरी फौज सही टैम पर नीं पूग सकी ही। भागीरथ री रेजिमेंट जद भारत चीन री बॉर्डर तक मुस्कल सूं पूगी तो सगळी जमीन खून सूं न्हायोड़ी ही। तड़फता सैनिकां नैं देख'र भागीरथ रो हियौ पसीजग्यो। भागीरथ चौधरी आंख्यां मांय उण सैनिकां रै घरआळां रा सुपना देखतो मन मांय दुस्मण सूं बदळै री आग मांय भुंजीजै हो। पण अब कर भी के सके हा, भारत रै माथै मांय हार ही मुहर मंडगी ही। बठै सूं मायूस हुयेड़ा पाछा बच्योड़ा फौजी मून धार'र आपरै-आपरै कार्य क्षेत्र मांय पूग्या।

फौज सूं छुट्टी लेय'र अब भागीरथ घरै आयो हो। घरै मां-बाप समेत भाई संगळिया सगळा राजी हुया। उणनैं लखायो जाणै राड़ रै अखाड़ै सूं निकळ'र सांति अर प्रेम री दुनिया मांय आ पूग्यो हूं। भागीरथ आपरै हथाई मांय व्यस्त हो, फौज रा कारनामा सुणावै हो। इतरै मांय दूर सूं नेबसिंह सरदार रेडियो लेय'र आवतो दीस्यो। रावते चौधरी बीं नैं हेलो पाड़्यो, ''आ भाई नेब, आज रेडियो सागै ई कियां?''

''की दसूं परावा, भारत और पाकिस्तान दै विच जंग छिड़ पई है।''

नेबसिंह री बात सुणतां ई सगळां रो ध्यान रेडियै मांय चालती खबरां पर गयो, रेडियो पर खबर चाले ही, ''देर रात भारत के जैसलमेर क्षेत्र में पाकिस्तान ने घुसपैठ कर दी, जिसमें भारत के बड़ी संख्या में जवान शहीद हो गए हैं। सेना में अवकाश पर पहुंचे सभी सैनिकों की छुट्टी निरस्त कर दी गई है। तुरंत प्रभाव से सभी सैनिक छावनी में पहुंचने का आदेश है।'' आ बात सुणतां ई सगळां री हांसी गायब-सी हुयगी ही। रावतै गरब सूं कैयो, ''भारत मां रो थूं बेटो पैली है अर आपरी मां रो दूजो।''

इतरो सुणतां ई भागीरथ आपरो सामान बांध'र चाल पड़्यो।

जुद्ध बडो भीसण हुयो। भागीरथ आपरी बटालियन में सबसूं आगै लड़ रैयो हो। जुद्ध चरम पर हो। इण बिचाळै अेक गोळो भागीरथ रै खेमे मांय आयनै पड़्यो। इण धमाकै सूं डेढ दर्जन सूं ज्यादा फौजी शहीद हुयग्या, भागीरथ सहित दो दर्जन सूं बेसी सैनिक घायल हुयग्या हा। आपरै साथियां रै चिथड़ा नैं देख'र भागीरथ रो हियौ कटीजै हो। आंख्यां लाल कर आपरी रायफल उठाई अर गोळ्या साथै बदळै रा अंगारा बरसाण लाग्यो। दुस्मणां रै लासां री थेई चिण न्हाखी। खून सूं तरबतर भागीरथ रो सरीर भख मांगै हो। इतरै मांय अेक छर्‌रो भागीरथ रै आंख्यां मांय आयनै लाग्यो अर बीं री आंख्यां आडो अंधारो छायग्यो। पण फेर भी रायफल सूं गोळियां री आग ठंडी नीं हुई। थोड़ी-सीक देर पछै भागीरथ निढाळ होय'र गिर पड़्यो। बो बेहोस हुग्यो हो।

भागीरथ री आंख खुली जद वो आर्मी रै कैंप मांय हो। आंख्यां खुलतां ई केई उण रा फौजी बेली उतावळा-सा आया अर बोल्या, ''भागीरथ, आपां जंग जीतग्या हां।''

इतरी बात सुणीजतां ई भागीरथ रै मन तिरपत होयग्यो। अेकर आंख्यां फेरूं बंद कर'र जी सौरै सूं लांबो सेकारो लियो अर मुळकतै मूंढै सूं आंख्यां खोल'र बोल्यो, ''भारत माता री जै हो।'' सगळा फौजी उथळै में जैकारो दियो। भारत मां रै जैगान सूं आखो कैंप गूंज पड़्यो। भागीरथ री अेक आंख रो ऑपरेशन हुयो हो। मतलब आंख खराब हुयगी ही। भागीरथ नैं घर सूं उणरै भाई रो संदेसो आयो हो कै बापूजी री हालत ठीक नीं है, बै थासूं मिलणो चावै है।''

रावतै चौधरी री सेहत पैली जियां नीं रैयी ही, बीमार रेवण लाग्यो हो। मतलब अब सरीर साथ छोडण सारू जतन करण लाग्यो हो। भागीरथ आपरै बापू कनै जाय'र पगां लाग्यो। उणरी मां बेटै री सलामती पर भगवान रो गान करै ही। भागीरथ रा सगळा भाई उणरै सारै

खड़्या हा। रावतो खड़्यो होवण री आफळ करी पण खड़्यो नीं हुईज्यो। बस, उणरै मूंढै सूं इतरो अेक ई सबद निकळ्यो—''लखदाद...'' अर भळै सोयग्यो।

भागीरथ नैं ठाह चालग्यो हो कै बापू अबै घणा दिन नीं काढैला। भागीरथ रात नैं आपरै बापू रै कनै ई सोयो हो। आधी रात नैं बस अेक आवाज उणरै कानां मांय पड़ी—''पाणी...''

भागीरथ तावळो-सो खड़्यो होय'र गिलास मांय पाणी लेय'र आपरै बापू रै अचेत मूंढै मांय चम्मच सूं दो बूंद गेरी ही कै उणरै बापू अेक सिसिकारी मारी अर बांरी आंख बंद हुयगी। पाणी होठां सूं गाला पर आयग्यो। रावतो चौधरी नीं रैयो हो। अेक आतमा आज परमात्मा सूं मिलगी। दिनूगै अंतिम संस्कार कर दीन्हो। भागीरथ आपरै बापू री ओळ्यूं मांय अबोलो बैठ्यो रैवतो।

अबै फौज मांय जावण रा ऑर्डर आयग्या हा। पण भागीरथ रो जोस अब पैली री भांत नीं रैयो हो। स्यात उणनैं अबै थापी देय'र ब्हीर करण आळो अब कोई नीं हो।

फौज मांय केई साल रियां पछै भागीरथ रो रिस्तो कर दीन्हो। बो छुट्टी लेय'र गांव आयो अर उणरो ब्यांव होयग्यो। ब्यांव रै बाद भी उण ढाणी मांय हरमेस भागीरथ नैं किणी चीज री कमी सी ही लागती रैयी। टैम टिप्यां पछै भागीरथ नैं रिटायरमेंट मिलग्यो। भागीरथ आपरी जोड़ायत नैं लेय'र दूजै गांव में बसग्यो। मां उणरै भायां साथै बठै ई रैयी ही। मां अर भायां सूं मिलण नै तीज-तिंवार भागीरथ आपरी जोड़ायत साथै जावतो अर कमरे मांय आपरै बापू री फोटू देख'र हाथ जोड़'र आय जावतो।

केई महीनां बाद उणरी मां भी बीमार रैवण लागी अर भागीरथ सूं मिल्यां पछै रात नै प्राण दे दीन्हा। मां रो सायो भी अबै उण माथै नीं रियो हो। केई साल पछै भागीरथ रै भी टाबर-टींगर हुयग्या। घर-गिरस्थी मांय पूरा रमग्या। टाबरां री भणाई रो पूरो ध्यान राख्यो। सावचेती सूं टाबरां री परवरिश करी, जिणरो नतीजो ओ हुयो कै भागीरथ चौधरी रा दोनूं बेटा रतन अर लक्ष्मण सरकारी नौकरी रा मुलाजिम बणग्या हा। सुपात्र बेटा अर बेटियां री संगत मांय भागीरथ सगळा दुख भुला न्हाख्या अर आपरै बापू री भांत मूंछ्यां रै बंट देंवतो कैवतो सुणीजै, ''लखदाद है।''

बेटां रै ब्यांव रै बाद पोता-पोतियां नैं खिलावतो भागीरथ टाबरां री आंख्यां मांय आपरै बाळपणै नैं टोवै है। जद टाबर हांस'र आपरै हाथां सूं उणरी मूंछ खींचै जद बीतेड़ी दुनिया सूं बारै आय'र टाबर नैं गोदी मांय भरतो भागीरथ चौधरी जोर सूं हांसण लाग जावै है।

⌘⌘

कृष्ण कुमार 'आशु'

महानता अर नीचता रो गणित

जद उण म्हनैं नीच बोल्यो तो अेकर म्हनैं चिंत्या हुई। चिंत्या होणी लाजमी ही। भला जैड़ो मिनख सुदिया उठतै पाण ईज आपरी महानता रा राग आपूआप गावणा सरू करदयै, उण रा सगळा काम इण महानता रै च्यारूंमेर ईज घूमै अर अैड़ै मिनख रो सोच-विचार इण महानता सूं बारै ईज नीं निसरै, अठै तांई कै उणरो उठणो-बैठणो, सोवणो-जागणो, खावणो-पीवणो अर सूसू-वूसू करणो ई महान करम गिणिजै। और तो और, उणरै लारै हां मांय हां मिलावणै सारू ई सौ-पचास लोग जै-जैकार करता निजर आवै। उणनैं कोई कींकर नीच बोल सकै है!

फेरूं म्हैं तो जाम्यो ईज महान देस मांय हूं! अठै री तो माटी मांय ईज महानता रळ्योड़ी है। म्हंनै तो माऊ दूध ईज महानता घोळ'र पिलायो हो! इण सारू महानता म्हारी रग-रग मांय समायोड़ी है। अबै महान बणनै सारू नीं तो राम री भांत बनवास जावणो पड़ै अर नीं ईज क्रिस्ण री भांत कोई पराक्रम करणो पड़ै। मीरां अर सिव री भांत जै'र पीवणै री भी कोई जरूरत अबै महान बणनै सारू नीं है। जणा खांड खावणै सूं महान बण्यो जा सकै है तो जै'र पी'र भारतीय दंड संहिता री धारा 309 लगवावणै री जरूरत कांई है!

इण कळजुग मांय म्हैं महानता रा कैड़ा काम नीं कर्‌या! जिण उमर मांय रामभजन री बात म्हारा सास्त्र करै, उण उमर मांय म्हैं महानता हासिल करणै रा नूंवा-नूंवा नुस्खा सीखतो रैवूं! सोसल मीडिया मांय म्हैं आपरी महानता सारू अेक नीं, अलग-अलग नांव सूं केई वाट्सएप्प ग्रुप बणा राख्या है। इणां मांय म्हारा केई चेला-चेलियां, जिणां नैं म्हैं महान बणावणै रा सुपना दिखा राख्या है, बै रात-दिन म्हारै

ठिकाणो :
बालाजी री बगीची रै लारै,
वार्ड नं. 10, पुरानी आबादी
श्रीगंगानगर-335001
मा. 9414658290

हांसणै–बोलणै अर छींकणै–खांसणै माथै ईज म्हारी महानता रा गुण गावता ईज रैवै! म्हारो अेक सैनाण मिलतां ईज उणां रो महानता–राग सरू होज्यै! वाट्सएप्प ई नीं, फेसबुक अर ट्विटर भी म्हारी महानता रै गीतां सूं भर्‌योड़ा पड़्या है।

सोसल मीडिया मांय जठै कै हरेक सख्स महान बणनै री ताक मांय है, म्हनैं घणी सावचेती भी राखणी पड़ै। जणा म्हैं देखूं कै केई दिन हुया, म्हारी महानता रा गीत थोड़ा कमती गाया गया है तो म्हैं हाथूंहाथ कोई नूंवी छुरछुरी–सी छोडूं! म्हारा चेला–चेलियां उण छुरछुरी नैं आगै बधावै अर देखतां ई देखतां पूरै ग्रुप मांय म्हारी महानता रो गुणगाण होवण लागज्यै! साथै ई औ पण ध्यान राखूं कै जेकर कोई और आपरी महानता री पिचकारी छोडी है अर म्हासूं आगै निसरणै री ताक मांय है तो म्हैं तुरत–फुरत आपरी गोज मांय सूं महानता रा पांच–सात टोटका काढ'र ग्रुप मांय फेंकूं! म्हारा आं टोटका रै साम्हीं लोगां रा फुटकर टोटका टांय–टांय फिस्स होज्यै!

म्हनैं बेरो है कै लोग म्हारा गुण इयां ई नीं गावैला। इण सारू म्हैं चुग्गो भी फेंकूं। आजकाल चुग्गै रा रूप ई बदळग्या है। आजकाळै सैं सूं लुभावणो अर सायनायड सूं भी जादा खतरनाक जै'र पण सै'द जैड़ै मीठै चुग्गै रो नांव है—पुरस्कार! म्हैं आठ–दस पुरस्कार आपरी गांठ रो पईसो खरच'र सरू कर नाख्या है। अबै बडा–बडा बुद्धिजीवी अर कलम रा सिपाई औ चुग्गो चुगणै सारू म्हारा गीत गांवता ई रैवै। म्हारी चेलियां जद इण लोगां नैं फोन कर'र म्हारी महानता सूं परिचै करावै तो म्हारी महानता सूं भलांई नीं, पण चेलियां री इमरत घोळती आवाज सूं बडा–बडा आलोचक ई म्हारा मुरीद बणज्यै! म्हैं देवणो ईज नीं, लेवणो ई जाणूं! म्हैं इक्कीस सौ रो पुरस्कार लेवणै सारू तीस हजार रुपिया ई खरच करणै रो जिगरो राखूं हूं! इण सूं बडी महानता और कांई हुवैली!

म्हारी समझ मांय आयोड़ो है कै आजकाल महान मिनख री ईज पूछ है। महान बणनै रो गुर जेकर आपनै नीं आवै तो आपनै गधी ई नीं पूछैली! जेकर आप महान बणनै रो रस्तो सोध लियो तो गधी नीं, नूंवी–नूंवी परियां आपरी चेलियां–सहेलियां बणनै आपरा गीत गांवती निजर आवैली। इण सारू कैवूं कै म्हैं तो महान बणनै रै रास्तै माथै चाल ईज रैयो हूं, आप ई चालो! पैलां म्हारी जै–जैकार करो, पछै म्हैं आपरी जै–जैकार कराऊंला। मतलब आप म्हनैं गांधी कुहाओ, म्हैं आपनैं जिन्नो बणावणै रो ठेको ले लेस्यूं! बाकी रैयी बात म्हनैं नीच बतावणियां री तो आप जाणो हो, जका लोग महान नीं बण सक्या, बै अबै लोगां नैं नीच कैय'र आपरी महानता सिद्ध करण री खेचळ करै है। पण इण सूं म्हारी महानता माथै कोई फरक नीं पड़ै! म्हैं महान देस रो महान नागरिक हूं अर सोसल मीडिया, चाटूकारी साहित्य, लोकचावो होवणै रो चाव अर पुरस्कार री चावना जद तांई मिनख मांय रैसी, म्हनैं महान बणनै सूं कोई नीं रोक सकै।

⌘⌘

नागराज शर्मा

बस स्टैंड पर

गरमियां रा दिन। सूरज आपरी प्रखरता रा दरसण करवा रैयो हो। जीव-जिनावर, आकळ-बाकळ पंखेरुवां री उडार बंद। लोग आपरा थैला हाथ में लटकायां, बस स्टैंड पर बैठा बंतळ करै। पंखा दनादन चाल रैया हा, फेर भी केई लुगायां हाथ रो बींजणो झलाय भीसण गरमी री सूचना देय रैयी ही। टाबरिया कुमळायोड़ा आपरी मां री गोदियां मांय दुबक्या पड़्या हा। म्हैं निजर पसार देखी, कोई सीट खाली हुवै तो विसराम करां। दिन रा बारह बज रैया हा। जयपुर-पिलाणी बस निकळ चुकी ही, अबै दूसरी बस री बाट में आसरो तलास रैया हो। आखिर अेक सीट खाली हुई, बठै म्हैं तावळो-सो आसण जमायो। बैठ'र सौरो सांस लेय रैयो हो। थोड़ी देर पछै अेक ठाडो-सो मोट्यार म्हारै कनै आय'र बैठग्यो। उणरै हाथ में अेक मोटो-सो लट्ठ हो। बियां आदमी अधखड़ हो, औ ई कोई पचास-पिचपन रै लगैटगै। दाढी-मूंछां सलीकै सूं जचा राखी ही। सिर पर गुलाबी रंग रो रुमाल। खादी रो धोळो कुरतो अर उणी मेळ री धोती सलीकै सूं पैर राखी ही। बो म्हारै कनै पग पसार'र बैठग्यो। लट्ठ हाल ई हाथ में लेय राख्यो हो। म्हैं बीं कानी देख्यो अर बातचीत सरू करणै री तै करी। बियां भी टाइम पास करणो हो। बस आणै में अजै घंटै भर री देर ही। म्हनैं तो पिलाणी आणो हो, पण कनै बैठ्यै मोट्यार रो बेरो कोनी कठै प्रस्थान करण रो विचार हो। म्हैं अेक छोटो-सो खंखारो कर'र बीं कानी देख्यो अर बात सरू करी :

—कठै जास्यो ?

—औ ईज तो आज तांई बेरो कोनी पट्यो कै आखिर जाणो कठै है ?

—म्हारो मतलब कुण सै स्टैंड पर उतरोगा ?

—के चांद पर उतरणो है जको उतरणै री चिंता ? बियां उतरणो तो टाबर रो बाजै, म्हारी उमर हाळा तो दिवंगत श्रेणी में नांव लिखावणिया है।

ठिकाणो :
संपादक, बिणजारो
बिणजारो प्रकासन
पिलानी-333031

—(म्हैं हाथ सूं पून घाल'र) ओ हो, आज तो गरमी भौत जोर सूं पड़ रैयी है।

—(मोट्यार इन्नै-उन्नै देख'र) कठै पड़ी है, म्हनैं तो कोनी दीखै!

—(म्हैं हांस'र) भाईजी, गरमी दीखै थोड़ी है, जको पड़ैगी।

—भई म्हैं तो आज तांई सुण्यो है कै गरमी मैसूस करी जावै है। सरदी-गरमी कदै पड़ै कोनी, बस मैसूस करी जावै है।

—(म्हैं पूछ्यो) और आजकाल के चाल रैयो है?

—सो-कीं चाल रयो है। रेल चाल रैयी है, बस चाल रैयी है, राजनीति री चालां चाल रैयी है। चुणाव री ल्हैरां चाल रैयी है। उरै सौ-कीं चलायमान है, खाली थिर है सांच।

—थांनै विकास रो नारो कियां कांई लागै? म्हैं पूछ्यो।

—चोखो लागै है। म्हैं तो जलम्यो जद सूं ई विकास-जात्रा करण लाग रैयो हूं। टाबर सूं जवान, फेर अधखड़ अर अबै बुढापै री त्यारी, औ विकास नीं तो और के है? आदमी बण्यो ई विकास खातर है। तूं ई देखलै, पैली किसान धोतियो बांध'र मोटी मोचड़ी पैर'र हळ बाया करतो। अब पैंट पैर'र हवाई चप्पलां पैर'र हळ जोत रैयो है। नाज पैली ई होंवती अर अब भी हुवै। आदमी रो रूप-रंग बदळतो रैवै, औ ईज विकास है।

—सरकार 'सब का साथ, सब का विकास' रो नारो देय रैयी है, औ अपणै आप में विलक्षण कोनी के?

—ईं में के नई बात है? लोग वोट देकर चुणाव करै। कोई मराठवाड़ा सूं आवै, कोई आसाम, कोई तमिलनाडु सूं। देस में च्यारूं कानी सूं अेम.पी. चुणकर आवै। तो बै भांत-भांत रा मिनख सब नैं सागै लेकर ही तो चालै! नीं चालै तो सरकार भी कोनी चालै। विकास अेक प्रक्रिया है, जो विश्वभर में चालती रैवै। रात-दिन बिना थक्यां। औ ईज विकास है। नारो लगाकर के नई चीज आवै है? जियां मौसम बदळै, फळ-फूल लागै बियां ई आदमी पढ-लिख'र कमावण जोग हुवै अर आपरी सुख-सुविधा रा साधन जुटावै, औ ईज तो विकास है।

—देस री सुरक्षा रै बारै में आपरा के विचार है?

—सुरक्षा नैं के खतरो है? सीमा पर तो इयां ई चिरड़-पिरड़ चालती रैवै, बाकी आपणी सेना बणी जद सूं ई त्यार है, कोई छेड़'र तो देखल्यो।

—पण देस नैं तगड़ो प्रधानमंत्री चायै!

—तगड़ो के कुस्ती लड़ावणी है? तगड़ै सरीर रै सागै-सागै बुद्धि सूं भी तगड़ो होवणो चाईजै, नीं तो मौकै पर फजीती करवा बैठै। बीं री फजीती सागै देस री फजीती बेसी होवै।

—थांनै देस रो भविस्य कियांलको लागै?

—भविस्य चमकतो लागै। हजारां साल री गुलामी झेल'र त्यार हुयोड़ो देस तरक्की की राह पर चाल रैयो है। लोगां री सुख-सुविधा खातर प्रयास करतो जा रैयो है।

—थे कितरा भाण-भाई हो?

—के रासण-कारड बणावणो है? बोहळा ई भाण-भाई हां।

—थे कठै ताणी पढ्या हो?

—पीरामल स्कूल ताणी।

—मोटर बगड़ कद पूगसी?

—घड़ी मिला लियै।

—आपरी खुराक?

—मिलज्या जकी ई खुराक।

इत्तै में बस आयगी। म्हैं तावळो-सो बस में चढग्यो। म्हारै गेल्यां-गेल्यां बो पचास-पिचपन साल रो गबरू ई आयग्यो। म्हारै कनै ई बैठग्यो। सागै अेक मूंफळी री थैली ही। बस चाली तो मूंफळी री थैली म्हारै कानी करी अर बोल्यो—ले टाइम-पास कर, सार्थक टाइम-पास कर। अबार तांई तो झूठी जाड़ां-जिगदी कर रैयो हो। आज देस में लोग इयां ई थूक उछाळता रैवै, बीं में कीं आणी-जाणी कोनी, देस में झूठी कहाणी चाल रैयी है।

म्हे दोनूं मूंफळी कुड़कण लाग्या। इत्तै में कंडक्टर आयो अर पूछ्यो—टिगट?

बो अधखड़ आदमी दस रो नोट पकड़ायो।

कंडक्टर पूछ्यो—कठै री?

अधखड़ बोल्यो—दस रुपिया में कठै तक ले जा सकै है, बठै की ही।

कंडक्टर टिगट काट दी। म्हारै कनै पास हो, बो बीं नैं दिखा दियो। मूंफळी समेट ली, म्हनैं नींद रो गुटकियो आयग्यो, कारण कै खिड़की रै स्हारै बैठ्यो हो। ब्रेक मारतां सागै झटको लाग्यो अर म्हारी आंख खुलगी। म्हैं म्हारै पड़ोसी नैं देख्यो तो सीट खाली मिली। म्हैं सोच लियो हो कै दस रुपियां रो स्टैंड आयग्यो लागै।

⌘⌘

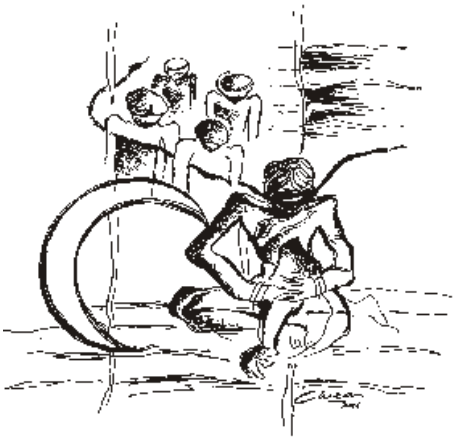

कमल रंगा

विद्रोह अर विरोध री जुगलबंदी : रामदेव आचार्य री कविता

कवि हुवणो अर कवि करम रै पेटै समरपित-प्रतिबद्ध हुवणो दोय जुदा-जुदा अरथ राखण वाळी स्थिति हुवै। जे कोई कविता नैं आपरी रग-रग में रमा'र उण सारू अेक तपस्वी री गळाई तपस्या करै, बो कोई दूजो नीं बीकाणै री धरा रो लाडलो सपूत ई होय सकै। जिकै में अेक ठावो नांव है—रामदेव आचार्य। स्व. आचार्य री कलम सूं विद्रोह अर विरोध री गजब री जुगलबंदी आपां रै साम्हीं आवै अर कविता रै लेखै नूंवा-नूंवा आयाम थापित करै।

हिंदी अर राजस्थानी दोनूं भासावां में कविता करम करता थकां रामदेव आचार्य आपरै दौर में कविता रै सिल्प, कथ अर ट्रीटमेंट नैं नूंवी दिशा अर गति देवण रा सारथक उपक्रम करता रैया है। उणां री कवितावां नै बांचता थकां पाठक नैं कठै ई असुविधा नीं हुवै। उणां री कविता पाठक सूं अेक गैरो रिस्तो बुणती थकी उणरै अंतस तांई पूग'र अेक रचनात्मक विस्फोट री सारथक पहल करै है अर आ बा ईज स्थिति है जद कवि, कविता अर पाठक अेकाकार होय जावै। कविता रो अेकू-अेक सबद आपरी अरथवत्ता रै वास्तै धन्य हुय जावै।

सबद नैं नूंवी अरथवत्ता देवण वाळा रामदेव आचार्य कविता रै सागै-सागै आलोचना रै सीगै ई महताऊ काम कीन्हो हो, जिकै रै वास्तै उणां नैं अर उणां रै काम नैं मोकळी सरावणा मिली ही। बै हिंदी आलोचना वास्तै आपरी कलम री प्रखरता अर नूंवा मापदंड थापत करण पेटै ई हरमेस याद करीजैला। बै आपरै दौर में हिंदी आलोचना रै खेतर में जबरदस्त दखल दीन्ही अर बीकाणै अर आखै प्रदेस री ओळखाण राष्ट्रीय स्तर तांई करायी।

ठिकाणो :
रंगा कोठी
'सुकमलायतन'
डी-96-97, मुरलीधर
व्यास नगर, बीकानेर
मो. 9928629444

रामदेव आचार्य आपरी मायड़ भासा राजस्थानी रै वास्तै ई पूरा मान-सम्मान रा भाव राखता हा। पण आप बरस 1959 रै पछै राजस्थानी कविता रचणी बंद कर दीन्ही ही अर आपरी राजस्थानी कविता री पोथी 'सोनै रो सूरज' बरस 1970 में छपी। उण में आप साफ तौर सूं स्वीकार कीन्हो हो कै म्हैं राजस्थानी में नूंवै परिवेस री संरचना सारू आधुनिक मुहावरो पकड़णो घणो दौरो मानूं हूं। इण वास्तै म्हैं राजस्थानी कविता मांडी जित्ती ही मांडी। जद कै अेकै कानी रामदेव आचार्य रै दौर रा अर घणा ई पछै री पीढी रा कवि इण पेटै सावचेत नीं हा अर इण ढाळै री बात कैवै तो दूजै कानी उणां रै बाद रै दौर में ई मोकळा राजस्थानी कवि अपरंपरागत, घिसिया पुराणा कथ-सिल्प नैं लेय'र कविता घोटता रैया। इण तरै म्हैं खुद रामदेव आचार्य रो मुरीद हूं। सागै ई उणां री इण बात री ई खुल्लै मन सूं सरावणा करणी चावूं कै बां आपरो रचना दायित्व निभावंता थकां जिकी ईमानदारी राखी, बा उल्लेखजोग है। आचार्य री सिरजण पेटै ईमानदारी उणां री पूरी साहित्यक-जात्रा री अेक-अेक ओळी रै रूप में साखी भरै।

राजस्थानी कविता रै वैभव नैं आप आगै तांई ले जाय सकता हा, पण बांरो 1959 रै बाद में राजस्थानी कविता नीं लिखणो म्हैं राजस्थानी रै वास्तै अेक बोत बडी कमी रै रूप में देखू हूं। जे बै लिखता तो राजस्थानी सिरजण नैं नूंवी दिसावां अर नूंवा आयाम देंवता। बांरी मान्यता ही कै कविता नैं बुद्धि सूं इण भांत आच्छादित नीं करणी चाईजै कै उण री निजता अर सरसता गुम हुय जावै।

फगत दिमाग सूं मांड्योड़ी कविता जटिल अर पराई लागै। उणमें अनुभूति री निजता नीं हुवै। आचार्य द्वारा सिरजण पेटै कैयोड़ी इण बात रै संदर्भ सूं म्हैं दावै रै साथै आ कैय सकूं हूं कै आचार्य रामदेव आपरी राजस्थानी कवितावां गैरी अनुभूति रै सागै साची काव्य-संवेदना सूं रची। आप राजस्थानी कविता रै सिल्प नैं लेय'र खासा गंभीर हा। बांरी अभिव्यक्ति रो अंदाज आपरो खुदोखुद रो हो। कवितावां में उपमावां या कैवूं प्रतीक तो बै नूंवा अर मौलिक हा। आपरी कविता माथै किणी री ई छिब या पड़छिब नीं ही।

आप नारी विमर्श नैं लेय'र उण दौर में कविता रचता हा, जद इण कानी कोई पण गंभीर नीं हा। आपरै काव्य संग्रै री अेक कविता 'दीवाळी साची बोली या झूठी ?' अपणै आप में उण दौर री नूंवी सैली, नूंवै तैवर रै सागै रच्योड़ी कविता ही, जिकी भारतीय भासावां री कवितावां री जोड़ री ही। आप देखो, इण लंबी कविता रो अेक दाखलो :

देख कवि! थूं मरुधर रो रैवण वाळो है
क्या थनैं अठै दिवलां में तेल दीखै ?
थूं मीरां रै देस रो कवि है
देख थारी मीरां रो गिरधर छुआछूत री कोटड़ी में बंध्योड़ो है
थूं परताप रो भगत है
देख थारी आजादी नैं लूटेरा लूटणी चावै है।

जद कै आ कविता अभिधा सक्ति में रच्योड़ी ही, पण कविता रा तेवर अर संदर्भ अेक नूंवी बानगी ही। बांरी कवितावां री समूची स्थिति राजस्थानी कविता रै उण बगत रै दौर में

आपरो अेक ठावो अर अलायदो मुकाम राखती ही अर आज ई राजस्थानी कविता री आजादी रै पछै रै इतिहास में जद-कद ई कविता पेटै चरचा हुवैला, म्हैं समझूं हूं रामदेव आचार्य रै सिरजण नैं स्मरण-निवण करयो जावैला।

माटी री सौरम, संस्कृति री लूंठी धरोहर रै सागै मन री चंचलता नैं आपरी साहित्य-साधना री भट्टी में तपा-तपा'र सबद-सबद तपस्या करण वाळा रामदेव आचार्य री कलम विद्रोह रै तीखै अर गैरै स्वर नैं रचती ही अर सागै ई विरोध री आग नैं सही अर ठीक मात्रा में हवा देंवती रैयी है। बठै ई आपरी कलम लोकरंग नैं परोटतां प्रकृति प्रेम रै रिस्तां री मीठी सौरम हरमेस पाठकां नैं सूंपती रैयी है। अेक दाखलो देखो :

सावण में जद आभो बरसै
बैरण बिजळी सूं कुण जीतै ?
पिवजी परदेसां जाय बसै
इण मनड़ै पर क्या-क्या बीतै।

इणी तरै कवि सुपनां में विस्वास नीं करता थकां कैवै है :

सपनां रौ क्या विस्वास
नैणां में ही बिलमाय लियो।

आचार्य कवि करम करता थकां समाजू सरोकार अर अेक रचनाकार रै दायित्व रै पेटै घणा सावचेत रैवता हा। बांरी राजस्थानी कविता 1952 सूं 1959 रै कालखंड में रची थकी कवितावां है। उण दौर में फैल्योड़ी सगळी कुरीतियां, अव्यवस्थावां, हालातां, मानवीय पीड़ावां, विद्रूपतावां अर विसमतावां आद नैं आपरी पैनी दीठ सूं देख-परख सूक्ष्म जांच-पड़ताल करता थकां कविता रै सांचै में ढाळण वाळा कवि आचार्य समाज में फैली कुरीतियां पेटै रचै है :

मैं सुणी अठै है अेक कथा, भैरूंजी बेटा देवै है
तन-मन रा सारा पाप काट, दुखियां रा दुख हर लेवै है।

इण तरै रा गैरा अर तीखा बाण बांरी कविता रै मारफत चालता रैया है।

मिनखां रै रिस्तां में बधतो प्रदूषण अर रिस्तां में सूखतै रस री स्थिति में अर उत्तर आधुनिक वैश्वीकरण रै दौर में जद मिनख अेक उपभोग री वस्तु मात्र बण जावै अर मिनख-मिनख रो दुस्मण बण जावै, अैड़ा हालातां रै पेटै 1950 रै दौर में ई कवि रामदेव आचार्य आपरी कविता में इण भांत रचै है अर पूंजीवादी व्यवस्था आद माथै गैरी चोट करै है :

छाती पर मूंग दळै लोभी
लिछमी सूं दुनिया धूजै है
राखस री जूणी इसी बणी
मिनखां नैं मिनख नीं सूझै है।

अेक बानगी और देखो :

आ सड़ी सभ्यता नागण बण
बच्चां नैं खाणो ही जाणै

कठपुतळी-सी आ दुनिया है
धोळै दिन धरती धड़कै है।

इणी तरै कवि आचार्य री कविता में परदेस रै अकाळ, पाणी री कमी अर मिनख री थिर पीड़ा नैं किण सांतरै तरीकै सूं साम्हीं लावै, आप देखो :

पीवण नैं नीं
पोवण नैं नीं
रोटी पर पड़ग्यो काळ अठै
पीसै सरीर पोवै आंसू
सपना बणग्या जंजाळ अठै।

इणी तरै कवि शोषण रै विरोध में ऊभौ हुय'र किण भांत आपरी बात राखै देखो :

है तपै तापड़ा शोषण रा
सपनां री मांझळ रात कठै।

कवि रामदेव आचार्य री राजस्थानी कविता रो कैनवास बडो है। कवि आजादी रै ठीक बाद रै दौर में कविता रै स्वर नैं घणी ऊंचाई देंवता रैया है, अर नूंवा-नूंवा प्रयोग ई बै करता रैया है :

सूरजड़ो बादळ सूं झगड़ै, अर मोर सरप नैं खावै है
गोधां नै बाछड़िया पटकै, अब इसो जमानो आवै है।

सागै ई अैड़ा हालातां सूं आम अवाम नैं सावचेत करतां कवि कैवै है, *''ओ जाग-जाग म्हारा बेली!''*

कुल मिला'र म्हैं आ कैय सकूं हूं कै कवि रामदेव आचार्य राजस्थानी कविता री परंपरागत स्थिति नैं आजादी रै ठीक पछै वाळै दौर में अेक नूंवी दिशा अर ऊरजा दीन्ही ही। बां आपरै अंदाज सूं कविता रो सांतरो ट्रीटमेंट कीन्हो हो। आचार्य राजस्थानी कविता रै सेट फॉर्मेट नैं तोड़ता साफ निगै आवै है। सागै ई आपरै काव्यकर्म में कठै ई आपां नैं थोप्योड़ी या कै बिना बात री जोड़्योड़ी कोई बात निगै नीं आवै। आपरी कवितावां में वैचारिक सोच रो कोई अणूतो घालमेल निजर नीं आवै। आपरी भासा री मठोठ अर उणरो सहज प्रवाहमय हुवणो बो भी अेक छंद मुक्त हुवतां थकां ई लय री ताल नैं गुंजावै है।

छेकड़ में कवि रै अनुभव संसार अर अनुभूति री मनावैज्ञानिक पड़ताल पछै प्रयोग री स्थिति अर कविता री अर्थवत्ता नैं ऊंचै फलक पर ले जावण री कला जे 1959 रै पछै राजस्थानी कविता रै वास्तै आचार्य री कलम कवितावां रचती रैवती तो स्यात राजस्थानी पाठकां अर म्हारै जिसा नौजवानां री पीढी रै वास्तै अेक सिमरध परंपरा, जिकी लूंठी धरोहर बण पावती तो आछी बात होवती। खैर! जिको आचार्य रच्यो बो ईज आपां री संपदा है। उणी जमीं माथै आपां कीं कर पावां, चावै विधा-विचार कीं ई हुवै, पण सबद रै पेटै साची साधना। आ ईज आज उणां रै सिरजण पेटै साची सिरजणात्मक श्रद्धांजळी हुवैला।

⌘⌘

गिरधरदान रतनू दासोड़ी

दो दिग्गज डिंगळ कवियां री विनोदप्रियता

आपां केई बार पढां कै सुणां हां कै 'जात सभाव न मुच्यते' यानी जात रो स्वभाव कदै ई जावै नीं। इणनैं ई 'तुखम तासीर' कैवै। अैड़ा घणा ई दाखला लोक री जीभ माथै मिलै जिणसूं इण बात री पुष्टि हुवै कै मिनख भलांई कैड़ी ई परिस्थितियां में रैवो पण अवसर आयां आपरी जात रो रंग अवस बतासी। अैड़ा ई दो किस्सा है। अेक किस्सो है संत हीरादास अर उणां रै चेले दामोदरदास रो अर दूजो किस्सो है माधोजी बीठू अर पोकरणै सलजी रो।

पैलै किस्सै रा नायक भगमा लेवण सूं पैला दोनूं ई मेवाड़ महाराणा री सेना रा साधारण सैनिक हा। अेक कसूंबी रो जोधो तो दूजो नैरोली रो मेड़तियो। जिण जागां अै तैनात हा उठै कोई 'द्वारो' हो अर अै दोनूं फुरसत मिलती जणै भजन सुणण अर भोजन करण बुवा जावता। होळै-होळै जोधै सरदार माथै भगती रो रंग चढियो सो उणां भगमा लेय लिया अर हीरादास रै नाम सूं जाणीजण लागा। उण द्वारै रो महंत रामसरण हुयो जणै हीरादास नैं उठै रा महंत बणा दिया। हीरादास नैं महंत बण्या देख्या जणै मेड़तियो सरदार ई भगती में भीनो, सो हीरादास सूं कंठी बंधायली अर आपरा शस्त्र बीजा तो पाछा जमा करा दिया, पण गुरु-चेलै सीसम रा दो घोटा आपरै कनै राख लिया कै मौकै-टोकै कणै ई काम आवै।

अबै दोनूं गुरु-चेलो भजन करै अर आपरो जमारो सुधारै। अठीनै मारवाड़ री भोम कानी आयोड़ा ऊंडूं-काशमीर, मोखाब आद गांवां रा जाट बीजा काळ-कुसमै री बगत मक्की-ज्वार आद लावण सारू मेवाड़ कानी जावता, जणै उणां रै ढबण अर भोजन रो ठायो इण संतां री जागां ईज ही। सो उण चौधरियां री आं संतां रै प्रति श्रद्धा बधती

ठिकाणो :
प्राचीन राजस्थानी साहित्य संग्रह संस्थान, दासोड़ी तहसील-कोलायत जिला-बीकानेर (राज.)
मो. 9982032642

गयी अर उवै हीरादास रा कंठीबंध चेला बणग्या। अेकर उणां इण साधां सूं अरज करी कै अबकाळै चौमासो म्हांरै अठै करज्यो जावै।

इयां आ बात उल्लेखजोग है कै 'ऊंडूं-काशमीर' गांव बाबा रामदेव री जलमभोम है। आज ई उठै उवा जागा मौजूद है जठै 'तंवरां सूं दिल्ली गई' उण बखत उणां आपरा गाडा अठै आय छोड्या। आज ई उवा जागा 'गाडाथळ' बाजै अर लोक आस्था रो केंद्र है। जद चौधरियां संतां सूं अरज करी जणै अै दोनूं गुरु-चेलो ऊंडूं-काशमीर आयग्या। चौमासो करज्यो। रामधुन री रणकार लगाई अर आपरै ज्ञान मुजब कथावां सुणाई।

चौमासो पूरो हुयो जणै लोगां कथा माथै चढावो करज्यो। नगद नाणै रै टाळ कांबळां, पटूड़ा, लंकार आद ठावका गाभा चौधरियां करज्या। अठीनै दो-च्यार माड़ेचा ई इण ताक में आयोड़ा कै कठैई मालाळी हुवै तो वरस सौरो कटै। उणां देख्यो कै चौधरियां साधां नैं जोर सीख दी है। अै साधड़ा अठै सूं बहीर हुवै जणै आडफेर देय क्यूं नीं इणां सूं मालमत्तो खोस लियो जावै। आंरै कांई बाखड़ी गायां रो घी बेच्योड़ो है! साधड़ा भळै कठैई च्यार दिन कंठ फाड़ लेवैला। सो उवै ई तोजी में हा कै कणै अै संत अठै सूं बहीर हुवै अर कणै इणां नैं कथा रो महात्म्य बतावां!

सेवट चौधरियां दो ऊंठ लेय अेक माथै गुरु अर दूजोड़ै माथै चेलै नैं बैठाय पूगावण नै बहीर हुया। सात-आठ कोस गया हुसी कै खींपां मांय सूं पांच-सात आदमी निकळिया। जिणां रै हाथां में कस्सी-डांडिया जैड़ै डांगड़कै लियोड़ा। आवतां ई हाको करज्यो, ''छोड! छोड ऊंठां नैं छेका छोड! जे जीव व्हालो है तो छोड पा। नीं जणां सीधी कपाळ में आवै। भेजो पो खिंडहे।'' हांकला अर अपरोगा मिनख देख बिचारा चौधरी डरिया अर कातर दीठ सूं गुरां कानी जोयो अर कह्यो, ''बापजी! अै तो धाड़ेती है! कंऊ करां? म्हे गरीब आदमी आंनै को पूगां नीं। म्हांरा जूंग खोससी।''

आ सुणी जणै चेलै गुरां कानी जोयो अर पूछ्यो, ''बापजी कांई आदेश है? राम भणूं, का?''

जणै बापजी कैयो, ''कीं नीं करणो, हणै राम मत भण! अै ई भूख सूं अंत आय औ काम कर रैया है। आंनै औ पूरो माल दे दो। जको बिचारै चौधरियां रा ऊंठ बीजा छोड दे। नींतर आंरै आ कथा मूंघी पड़सी।'' आ कैय'र गुरां उण माड़ेचां नैं कैयो, ''म्हे तो भाई मांगां अर खावां। म्हांनै अतीतां नैं कांई लूटो। इण काम सूं राम ई राजी नीं। कांई थे सुणी नीं :

डूम गूम लघु वांदरो, पिणघट पर दासीह।
सूता कुत्ता न छेड़िए, भूखा संन्यासीह।।

आ सुणी जणै उणां मांय सूं किणी कैयो, ''म्हाराज, आ ज्ञान गांठड़ी बांध्योड़ी राखो। भळै आगै कठैई काम आसी। म्हांनै घणो ज्ञान बघारण री जरूरत नीं है। केई दिन भळै कथावां करणी अर सीरो दटकावणो चावो जणै तो अै ऊंठिया छोड दो अर जावो परा।''

जणै गुरां कैयो, ''थे आ माल-मत्ता पूरी लेयलो अर अै ऊंठिया छोड दो। अै बापड़ा गरीब आदमी है। आंरा होम करतां रा हाथ क्यूं बाळो।''

आ सुणतां ई उणां मांय सूं किणी कैयो, ''मसाणां में आई लकड़ी पाछी जावै भला! हमै म्हाराज हर भजो।'' आ कैय'र उणां ऊंठिया ई खोस लिया अर माल ई पूरो ले लियो। जितै उण संतां कोई करामात नीं बताई। इतरै किणी माड़ेचै म्हाराज री चिलकती चादर खांची। जणै उणां मांय सूं किणी कैयो, ''अरे भला आदमी, ईं चादरां रो भला की करहे?''

जणै उण चादर खांचणियै कैयो, ''ऊंठ रै गादियां करांला।''

चादर खींचीजती देखी जणै गुरां कैयो, ''रे बावळा हुया रा के, कांई बात है? म्हे बिनां गाभै भूंडा नीं लागां?''

आ सुण'र उणां मांय सूं अेक बोल्यो, ''बापजी, नागाधड़ंग फबोला। लोग घणी श्रद्धा राखसी अर पूजसी कै देखो बापड़ा कितरा त्यागी है, जिको तन माथै गाभो ई नीं राखै।'' आ कैय'र उणां गुरां री चादर खांची जणै चेलै कैयो, ''बापजी, थे कैवो तो राम भणलां?'' आ सुण'र गुरां कैयो, ''म्हनैं ई लागै, हमै राम भणण री बगत आयगी!''

''तो कांई राम भणूं?'' चेलै पूछ्यो तो गुरां कैयो, ''भणलो भई।''

भणलो रै साथै ई चेले हाकल करी, ''ले संभळ, तनैं चादर दूं।''

आ कैय'र उण आपरै कनलै सीसम वाळै घोटै री अेकै रै जरकाई। हबीड़ लागतां अेक पाधरो हुयो जितै दूजोड़ै रै गुरां वळकाई। उवो ई लड़छ पाधरो। दो नैं पाधरा देख्या जणै अेक-दो गुरां-चेलै माथै बाही, पण संत ई हा तो आखिर रांगड़ ! उणां डांगड़क्यां रै आडो घोटो दियो सो डांगड़ै घोटै माथै पड़तां ई तिड़गी। संतां नैं आरती करण रै रूप में अर कीं खळो खिंडण सूं बाकी रा ऊंठ अर माल उठै ई छोड'र बांठां पग दिया जको पाछल ई नीं फोरी।

इण पूरै घटनाक्रम माथै बांकजी बीठू (बासणी) अेक डिंगळ गीत लिख्यो। गीत री भासा, भाव अर प्रवाह सरावणजोग है। पूरी घटणा आपां री आंख्यां साम्हीं प्रतख घटती निगै आवै। थोड़ी ओळखाण बांकजी री देणी समीचीन रैसी।

बांकजी बासणी गांव रा बीठू हा। महाराजा मानसिंहजी जोधपुर रा समकालीन अर सिरै गीतकार हा। माता निकळण सूं इणां रै आंख्यां री सोझी जावती रैयी जणै इणां महाराजा नैं अेक गीत लिख पेंशन करण री अरज करी :

लोचन उभै सीतला लैगी, कोई उधम न सूझै काज।
रोटी अमर दूसरा रिड़मल, मोनै कर दीजै महाराज।।

संवादात्मक गीत लिखण में बांकजी री कोई सानी नीं है। वांरा 'लूणी-कवि संवाद', 'ऊंठ-कवि संवाद', 'मंदोदरी-सूर्पणखा संवाद' आद गीत घणा लोकप्रिय है। आपरै समकालीन कवियां में ठावकी ठौड़ राखणिया बांकजी बीठू रा डिंगळ गीत भाव अर भासा री दीठ सूं नामी है। औ ईज कारण है कै अै गीत लोकरसना माथै आपरी ठावकी ठौड़ बणाई। 'कवि-ऊंठ संवाद' में अेक ऊंठ रो आत्मकथ्य है। बड़लू (वर्तमान भोपाळगढ) रै अेक जैन जती रै ऊंठ नैं हिड़कियो कुत्तो खावण सूं वो ऊंठ हिड़कियो हुयग्यो। जतीजी जाणियो कै ऊंठ मरसी, इणसूं आछो है कै ऊधार-सुधार किणी रै चेप दियो जावै। आ सोच'र उणां बासणी रै अेक चारण नैं

ऊंठ सिरका दियो। बारठजी ऊंठ पावण लेयग्या ही हा कै पाणी देखतां ई ऊंठ हिड़काव उपड़'र मरग्यो। ज्यूं ई जतीजी नै ठाह लागो कै ऊंठ मरग्यो तो उणां तगादो कियो। बारठजी रो हाथ आगै ई तंग हो अर ऊंठ मरतां ई गरीबी में आटो गीलो वाळी बात हुई। पईसा नीं बणिया जणै तत्कालीन आसोप ठाकरां नैं कैय जतीजी पंचायती कराई। उण बगत वां बारठजी बांकजी री मदत ली। बांकजी, जतीजी री आगली-पाछली सगळी बातां जाणता हा। वै गया अर ठाकरां नैं अरज करी कै मरतै ऊंठ म्हनैं जतीजी री कीं बातां बताय'र गयो है। मरतो कोई कूड़ नीं बोलै सो पंचायती सूं पैलां ऊंठ री बात आप सुणलो :

गुरां रै चढण ऊंठ इक गाढो, लाळ लगी हिड़क्यै री लेख।
ठाह करै चारण नै ठगियो, वेच दियो कर कपट विवेक।।
अरटियो गांम तिकण में औसर, भिड़क गयो पाणी लख भूत।
कवियण भार लदण रा कीना, सरड़ै (ऊंठ) किया मरण रा सूत।।

कवि कैयो कै म्हैं ऊंठ नैं कैयो कै मरतो कूड़ मत बोलै। जणै ऊंठ जावतो कैयग्यो कै गुरां तैं में कांई? आपरै गुरु, भेख आद में तोत कियो है। अै बातां तो तनै बताय दी। अेक-दो अैड़ी बात है जिकी मत पूछ। उणसूं गुरां री शान रा टक्का हुय जावैला :

पैलो कपट तिमणियो पूगो, दूजी करी गुरां सूं दूज।
तीजी सकळ भेख सूं तोड़ी, बात चौथोड़ी म्हनैं बूझ।।

तोई चौथी बात ऊंठ म्हनैं बतायग्यो। थे कैवो तो अरज करूं। जतीजी रो मूंडो पोलो हुयग्यो। पांच मो'रां ठाकरां नैं दी अर ऊंठ रो खातो आयो कर'र आपरी गलती मानी। बांकजी री प्रज्ञा अर प्रतिभा नै भोपाळदानजी सांदू रै इण अेक दूहै सूं समझ सकां, जिको उणां इणां रै सुरगवास पछै कैयो :

वळता लेग्या वांकजी, सच विद्या गुण संग।
ग्यान बिनां रहग्या गदा, ऊंठ-लदा अड़बंग।।

पुनः मूळ बात माथै आवतां थकां गीत री आपरै पठनार्थ ओळ्यां :

मझधर पिछमाण करै चत्रमासो, लख पुळ साधां पंथ लियो।
मारग मिळै माड़ रा मांझी, दोय संतां उपदेस दियो।।
चह अपराध गांठियो चित में, धारै सिखां छांटियो ध्यान।
चारू प्रसाद वांटियो चेलां, गुरां इसो ई छांटिय ग्यान।।
बाबा सिख मिळै बाथां सूं, थळ जातां सूं हरख थुवो।
सिख बातां सूं नहीं सलूधा, हाथां सूं उपदेश हुवो।।
वेद परायण इसी बचाई, मही सरायण सुणज्यो मूठ।
निज नारायण गुरु निवाजै, फजर गई तारायण फूठ।।
लागो ग्यान धरा पर लोटै, सुध बुध भूला भोम सिलै।
विहद कपाळ हुवा परवरती, मुगती पोहरां मांय मिळै।।

जाम घड़ी मुरछागत जागा, हर कर आगा वितन हरै।
लांठा गुरां पंजा सिर लागा, क्रम भागा डंडोत करै।।
पुर पुरस मिळै पुन पैलै, वेगी सुमरण जुगत वणी।
वळती डांग पछमणी वाटी, त्रिगुटी फाटी सीस तणी।।
वांट प्रसाद वळोवळ वागा, त्रसना भागी लोभ तणी।
चेलां गुरां वेड़ री चरचा, सांधां सौ-सौ कोस सुणी।।
हीरादास दामोदर हूंता, और संकै लेता उपदेस।
डांगां जिकां सिखां नै दीनी, वां संतां थांनै आदेस।।
खट मिळ आया खोसबा, सोधा साधां पास।
हीरादास ई हद करी, दाद दामोदरदास।।

कैयो जावै कै जिण धाड़वियां रै इणां रै घोटै री लागी उणां रै कानां रा पड़दा फाटग्या। उणसूं वै बोळा हुयग्या। जद कोई उणां मांय सूं किणी अेक नैं तन-गिनायत, घर-वित रा समाचार पूछतो तो जणै उवो जाणतो कै उण लूट रै विसय में ईज पूछै। उण बगत री अेक बानगी :

कोई पूछतो कै, ''घरै सैंग सरिया है?''

ओ कैतो, ''ओ पैलो घोटो इयै पुटबड़ै में पड़ियो!''

''ना, ना हूं इयां को पूछां नीं। हूं पूछां कै धीणो-धापो की है?''

जणै उवो कैतो, ''बीजोड़ो इयै कान माथै आयो!''

''अरे! हूं पूछूं कै निरोगा हो?''

जणै उवो कैतो, ''हूं तो खिरग्यो पो अर सबळो पड़ छूटो। बिचारो बच्यो पो। साधू कैण रा करम रा हता? डीकरा दुसट हा दुसट।''

❑❑

सीतारामजी बीठू रो जलम सींथळ में हुयो, पण वै साठीक में खोळै आयग्या हा, सो सीतारामजी साठीका ई बाजिया। बीसवीं सदी रा दिग्गज डिंगळ कवि सीतारामजी री पोथी 'कवि कंठाभरण' छंद शास्त्र रो नामी ग्रंथ है तो भळै ई आपरी मोकळी रचनावां अणछपी पड़ी है। उणां केई फुटकर डिंगळ गीत लिख्या, जिणां में अेक गीत 'ठिरड़ै री सोभा रो गीत' घणो चावो है। ठिरड़ो पोकरण पाखती रो इलाको बाजै। इण गीत में बीकानेर इलाकै रै बीठू माधजी अर ठिरड़ै रै गांव चौक (पोकरण) रै सलजी पोकरणा रो आपसी संवाद गुंफित है। सहज अर सरल शब्दावली में रचित इण गीत रो गीत सार आप तक पूगतो करूं :

बीकानेर इलाकै रा माधजी बीठू आठ सौ रुपिया लेय'र आथूण सूं ऊंठ लावण सारू आथरणा री बगत चौक री कांकड़ में स्थित अेक ढाणी ढूका। ढाणी आगै जाय'र पूछ्यो तो ठाह लागो कै ढाणी सलजी पोकरणै री है।

माधजी घरधणी नैं हेलो करयो तो अेक अधखड़ आदमी बारै आयो अर पूछ्यो, ''हां भइया, की कह?''

बैतियाण कैयो कै म्हारो नाम माधो बीठू है अर हूं बीकानेरियो रोहड़ियो चारण हूं? हूं अठै रातवासो लेणो चावूं।''

''अरे बा भलां आया! जी आया! म्हारी टपरड़ी पवित्र की। जी करता रैवोरा पण इया थांरो की काम? भला की लेवण आया ऐथ?''

''म्हारै कनै आठ सौ रुपिया रोकड़ी है। म्हनैं अेक ऊंठ लेणो है। सो इयै कारण इनै आयो हूं।'' माधजी कह्यो तो पाछो सलजी पूछ्यो, ''अरे भला मिनख! अबढी बगत, औ ऊनाळो, परभोम अर पछै इतरी सांवठी रकम। भला! भला ओ की कियो? जे कोई कुटळ मिल जावतो तो की करतो?''

आ सुण'र माधजी कैयो, ''अरे वडा सिरदार! अेक तो हूं चारण! पछै अठै च्यारां कानी पोकरणां रो पतंग। बतावो किण रीत रो म्हनैं डर लागै? साचै रजपूत रो जस करां अर जिको कुळवट लोपै तो म्हे सुवट रो वरण करां।''

सलजी नैं थोड़ो इचरज हुयो अर पूछ्यो, ''भला माणस, औ सुवट की हुवै?''

माधजी कैयो कै कुळवट लोपणियै छत्री माथै म्हे कटारी गळै घातां अर म्हारै रगत रा छांटणा उणरै देवां! पछै ई जे वो नीं मानै तो म्हें सुअवसर जाणर जूझ'र मर जावां।''

आ सुण'र सलजी कैयो, ''वाह रे बारठ, वाह! थूं तो म्हांनै, म्हारै पूरबलै जलम रै पुन्नां रै प्रताप सूं ईज मिलियो। पण कांई करूं? अेक तो ढाणी रो वासो! दूजो ढांगी (गायें) तिरसी। जे हूं गांम रैतो होऊं तो तनैं ऊंठ दिराय'र ठेठ थारै गांव छोडूं। पण भइया, अै शस्त्र बीजा क्यां बांधिया है?''

जणै माधजी कैयो, ''अै तो फगत म्हारै सरीर री सोभा है। म्हे छत्री माथै छोह (रीस)नीं करां। जे म्हांनै रीस आय ई जावै तो म्हे म्हांरो शरीर आपै ई छोल लां। क्यूंकै ईश्वर सनातन ई अैड़ो रचियो।''

आ सुण'र सलजी कैयो, ''वाह रे चारण, वाह! साचाणी थारै साथै सतजुग बैवै। पण भाई रे! रीस मत करजै, म्हारै अठै रा चारण तो कळजुग री माख्यां है जको छेड़्यां, इयां छिड़ै जाणै टांटिया छिड़िया हुवै। पण तनै धिनकार है। थारै दरसणां सूं म्हारी भूख पासै हुई। पण तूं रीस मत करजै म्हारै अठै रा चारण तो अैड़ा कळैगारा है जको बैता बाड़ां सूं राड़ां रचै। म्हें साम्हां मंडां नीं, उणसूं पैलां तो वै साम्हां फुरै जावै।'' माधजी री बातां सुण-सुण'र सलजी नै पतियारो आयग्यो कै इण आदमी नैं मारण री जरूरत नीं, औ तो रीस्टी आदमी है। आपै ई मर जावैला। सो हमै बातां-बातां में रात आधी आयगी। चंद्रमा मा घरै गयो। अंधारै में इणनै कीं नीं दीसैला कै लूटणियो कुण है? आ सोच'र सलजी, माधजी नैं आगलै गांवतरै सारू बहीर कर दिया। सलजी अंदाज लगा लियो कै हमै वो आदमी करीब जोजन अेक बुवो गयो हुसी। जणै लारै सूं लंबी बिरकां भरता खुद पूगा अर परिया सूं धाकल करी, ''अरे भइया, जे जीणो चावै जणै तो थारै कनै जको कीं है, वो बैवै जठै ई छोड'र बुवो जा।''

आ सुणतां ई कवि आपरी दुनाळी ताणी अर बोल्यो, ''हूं तो सबद-भेदी हूं, तूं अेकर पाछो बोल जको बोलतां ई धूड़ भेळो नीं हुवै तो म्हनै लाणत कैजै। म्हनै लागै कै थारै अजै धाड़ो धाड़ण रो काम पड़ियो नीं दीसै!''

आ सुण'र सलजी पाछो कैयो, ''अरे वटाळा चारण! तूं थारी वट कर। अरे भला मिनख! तनै थारै आखर याद है कै नीं?''

आ सुण'र माधजी पाछो कैयो, ''वट चावो जणै म्हारै साम्हां पग दो! बतावूं कै वट कैड़ी हुवै?''

आ सुणतां ई सलजी कैयो, ''आगो जा रे! मरयोड़ो केथ रो ई!!''

सेवट सीतारामजी कैवै कै दोनूं जातां रो जको सनातनी संबंध है उणनैं चार जुग जाणै। इण सनातनी संबंधां री मरजादा तो राम ई राखी जको कोई घाण नीं हुयो पण गढवाड़ां (चारणां रा गांव) नैं इण गीत रै माध्यम सूं ठिरड़ै री सोभा तो सुणा ई दूं :

जातां सीर चार जुग जाणै, राखी राम सनातन रीत।
सकवी कहै ठिरड़ री सोभा, गढवाड़ां सांभळज्यो गीत।।

⌘⌘

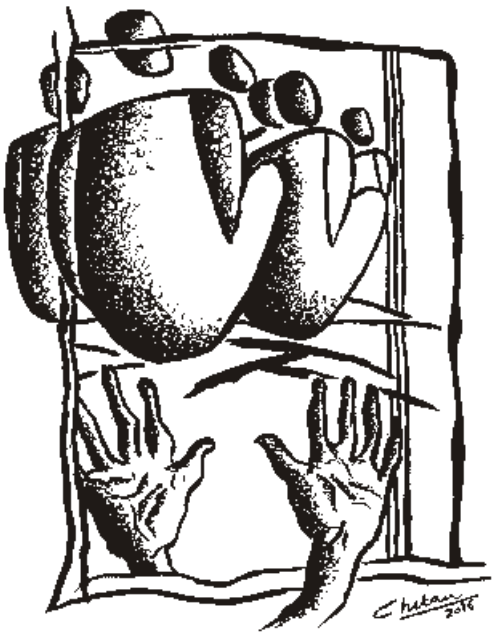

रामस्वरूप किसान

पाछणां री गंठड़ी

कास, म्हारो सिर
ऊंट री जीभ जैड़ो नीं होवतो
जकी भालै री नोक सरीखी
बबूल री तीखी सूळां नैं ई ढब कर लेवै

पण अफसोस
म्हारो सिर तो
ऊंट री जीभ जैड़ो ई है
जिको जुगां सूं
पाछणां री गंठड़ी चक्यां
बांरी धार रो
अनुकूलन करतो आयो है

पण भाया
म्हैं थक'र तळै पटकूं
इण सूं पैलां
पाछणां री इण गंठड़ी सारू
थारो सिर चाइज्यै
नीं तो फेर
गळो त्यार करलै।
⌘⌘

खांदा अर सिर

म्हारै खांदां पर
बांरा सिर हा

म्हे खांदा
हटा लिया

बांरा सिर
हवा में हींडता फिरै

पण खांदां री जड़ां
जमीन में ही
जिकै सूं
अंकुरित होग्या
म्हारा निजू सिर
म्हारै ई खांदां

पण बांरै सिरां तळै
खांदा अंकुरित नीं हो सक्या
आज लग
क्यूंकै सिर री जड़ां
जमीन में नीं होया करै।
⌘⌘

ठिकाणो :
संपादक कथेसर
गांव-पो. परलीका
जिला-हनुमानगढ़ (राज.)
मो. 9166734004

जीवता बाळण वाळां री लिस्ट

केई आदम्यां री मौत
म्हनैं झूठी लागै

म्हैं बांरी अरथी री
तलासी लेवणी चावूं
पण संकतो आ मांग कर नीं सकूं
अर भौत दिन
अफसोस में रैवूं कै
अमुक आदमी नैं
जीवतो बाळ दियो

म्हारी दीठ में
जीवता बळण वाळां री लिस्ट में
बै सगळा आदमी है
जिकां रो जीवण
औरां रो जीवण खाय-खाय
इत्तो फैलग्यो
कै बठै जाय'र
मौत ई चूंध जावै।
⌘⌘

क्यांरा दलित हां

छुरी पलारां
पण जठै
पलारणी चाईजै
बठै कोनी पलारां
हडवारां में
छुरी पलारणै सूं
के सारो पड़ै?

आरी चलावां
रांपी चलावां
पण गळत जगां चलावां

भारी काढां
पण जकी चीज
भारीजणी चाईजै
बा कोनी भारां

क्यांरा दलित हां
खुद रै पगां पर ई
कुंहाड़ी मारां।
⌘⌘

डॉ. रमेश 'मयंक'

मौत

वठै
जीवण लगाग्यो लंबी गोत
लोग कैवै—नदी री हुयगी मौत।

आवो-देखो—
सूख्योड़ी नदी रा सैनाण
पैलां—
स्हैर री गंदी नाळ्यां-गटरां रो पाणी,
पछै कचरो न्हाखण री ठौड़
जाणी-पिछाणी,
रूंखां नैं काट्या; ट्यूबवेल खुदाया
सूखा रा सैनाण निजरै आया।

वठै—
जीवण लगाग्यो लंबी गोत
मां-कूख मांय
बेटियां नैं नीं आवण देंवती
जलम सूं पैलां ई
साफ-सफाई करवा लेंवती
लोग नदी अर मां नैं
अेक जैड़ी मानता हा,
दोन्यूं रै सूखण रा कारण
मन-ई-मन जाणता हा।
वस्यान ई तो कोनी मरी?
अंधारां सूं कितरी डरी?
क्यूं नीं दियो उथळो
अर कैयी बातां खरी-खरी?

पाप री आंच सूं
किस्तर बचावै साच
आ नदी अर नारी री पीड़ है
कमती संभावनावां रा बीज
बधती भीड़ है।

⌘⌘

म्हारी पांती रो सूरज

म्हनैं चाईजै
म्हारी पांती रो सूरज
जिण सूं—
म्हैं शताब्दी रो सगळो अंधारो
बाळ सकूं, अर
बणाय सकूं—दो बगत री रोटी
उणां सारू—जो
अरदास, हार सूं निसास,
अभाव, तानां रै बिच्चै

ठिकाणो :
बी-8, मीरा नगर
चित्तौड़गढ़ -312001
मो. 9461189254

खूब मैणत करता थकां भी
भूखा रैय जावै,
सौर ऊर्जा सूं उणां री भूख
किस्तर मिट पावै ?
⌘⌘

ठौड़

म्हैं उण ठौड़ पे
ऊभो रैवणो चावूं हूं
जठै रोटी अर आवाज सारू
नीं हुवै कोई अवरोध,
मैणत करतो मिनख
क्यूं भूखै पेट सोवण री
मजबूरी नैं भुगतै ?
हक री बात उठावण सूं पैलां
सबद होठां मांय क्यूं रुकै ?

आवो—
इण भांत री ठौड़ री पिछाण बतावौ
पैली लैण मांय ऊभा हुय जावो
हरी बत्ती निजरै आवैगा
भीड़ रो रेलो बदळ जावैगा
म्हैं भगवान अर भाग्य सूं बत्तो
मिनख री मैणत पे भरोसो करूं
सांसां सूं सींच'र उण ठौड़
विचारां रा रूंख नैं हर्‌यो करूं।
⌘⌘

सूखग्यो रूंख

सूखग्यो रूंख
जो कदी हर्‌यो-भर्‌यो रैवतो
छियां देंवतो
पंखेरू डाळ पे बैठ'र गाता
मीठा फळां रो सुवाद
मिनख कदै नीं भूल पाता

अबै नीं रैया पानड़ा
बच्योड़ो कोरो ठूंठ
स्यात् मिनख सूं
रूंख गयो है रूठ !
⌘⌘

बी. एल. माली 'अशांत'

मिनखां री बातां

मिनखां री रची थकी
गयां पछै बची थकी
उजळी थकी कही थकी
मिनखां री बातां है
कैवणियां धरती रा
बातेसर बस्ती रा
रातां नैं गाळता
रसिया धरती रा
जागतै मिनख री
धरती पर बातां है।
पाथर में बोलती
बात नैं खोलती
रात री रळियावणी
घणी-घणी बातां है।
ठंडी ठ्यारी में
जगरै री खारी में
नेड़ै अड़ बैठ सुणै
मिनखां री बातां है।
जागतै मिनखां री
मिनखां री रची थकी
धरती रै ऊपरां
घणी-घणी बातां है।
⌘⌘

ठिकाणो :
3/343, मालवीय नगर
जयपुर 302017
मो. 9414386649

निशांत

खुसी रो काळ

अेक अरसै सूं
नीं आई है घरै कोई खुसी
घर री तो छोडो
कुटुंब-कबीलै में ई
नीं फुरकी है खुसी
उल्टा आ रैया है
मायूस करण वाळा समचार
आ बात
देस-दुनिया तांई ई जावै।
⌘⌘

बीं सूं मिलणो

आज रेलगाडी में
सफर करती बगत
बीं गांव रो अेक आदमी मिल्यो
जकै में म्हैं कोई
चाळीस-पैंताळीस साल पैली
सालखंड मास्टरी करी ही
बीं गांव में म्हैं
मुड़'र कदी नीं गयो हो
बीं सूं मिलणो
अेक तरै सूं
बीं गांव जाणो-सो होयग्यो
म्हैं बीं नैं बीं रै गांव में जावण रो
सन् बतायो
केई जाणकारां रा नांव बताया
बो बां रा हालचाल बताया
केइयां री तो आपरै मोबाईल सूं
फोटुवां भी दिखाई
उण पुराणै जमानै आळी फोटुवां भी
आपरै मोबाईल में कैद कर राखी ही
नूंवी तकनीकां सूं जुड़्यै
बीं माणस रा विचार ई नूंवा हा
उण आपरै बेटै रै ब्यांव में
टीको नीं लियो
बहुवां सूं ई ओलो-पल्लो नीं करावै
बीं री दुकान करण रा
काण-कायदा भी फूठरा हा
इयां तो दुनिया
आछै-आछै मिनखां सूं भरी पड़ी है
पण बीं सूं बी सीखी जा सकै है
केई आछी बातां।
⌘⌘

ठिकाणो :
वार्ड-6,
निकट वन विभाग
पीलीबंगा-335803
जिला-हनुमानगढ़ (राज.)
मो. 8104473197

सुमन

लिछमी रो अवतार

बेटी ही पण म्हनैं
बेटो कैय'र मान बधायो
भाटो आयो सिरदारां थांरै रावळै
इण बात नैं
लिछमी रो अवतार बतायो
दादीसा री बातां नैं
आंखियां रै मोतियां सूं
बारै ढाळी
थारी पीड़ रो
बंटवारो करसी
कैय'र मां नैं
थावस बंधवायो
दादोसा रै साम्हीं
सगळा बोला रैय जावता
म्हारै सारू चुप्पी तोड़ी
म्हनैं भणाई
घणै कोड सूं
पिणघट रै
खेतां रै
गेलै सूं टाळ
पौसाळ री डांडी दिखाई
म्हनैं बैवणी रै आसै-पासै
जिंदगाणी है लुगाई री
इण सोच सूं अलग
म्हारै हाथां मांय
कलम री ताकत झिलाई
बेटी ही पण म्हनैं
बेटो कैय'र मान बधायो।

⌘⌘

ममोलियो

छूवण दे म्हनैं ममोलियो
नैणां भावतो
उडीक रखावतो
औ मखमलियो-सो ममोलियो।

मेह रो साथीड़ो
टप-टप करती
बूंदां सूं बतियावतो
औ मखमलियो सो-ममोलियो।

मेह री छांटां जद
धरती री जाजम बण जावती
होळै सूं छांट धरती सूं रमतो
औ मखमलियो-सो ममोलियो।

ठिकाणो :
गोपालसिंह राठौड़
39 ए, सैकंड रोड
शक्तिनगर, पावटा
जोधपुर (राज.)
मो. 8875005502

सोनलिया धोरां री धरती माथै
लाल सुरंगी टीकी
बण टाबरियां नै रमावतो
औ मखमलियो-सो ममोलियो।
⌘⌘

भोळो-भाळो बाळपणो

बो भोळो-भाळो म्हारो बाळपणो कठै गयो?
खाटी-मीठी गोळी
आम रो चूरण गयो
बरफ रा गोळा
दस पीसा पचास पईसां री बातां कठै गयी
बो भोळो-भाळो म्हारो बाळपणो कठै गयो?

सतोळी अर गड्डा गया
गिल्ली अर डंडा गया
डरतां-डरतां दादोसा सूं
धोरै माथै लुकणो कठै गयो
बो भोळो-भाळो म्हारो बाळपणो कठै गयो?

आखातीज रो खीच-गळाणी
सांगरीयां रो साग अर सोगरो
होळी-दीवाळी रा रामा-स्यामा
कबड्डी रो खेड़ो कठै गयो
बो भोळो-भाळो म्हारो बाळपणो कठै गयो?

नींबड़ै री छांव
पीपळियै रा गीत
कैरां सूं रातां ढालूड़ा कठै गया
बो भोळो-भाळो म्हारो बाळपणो कठै गयो?

चिमनी री बाटां गयी
अेक थाळी री रीत गयी
लाइटां रै उजास में
बो प्रभाती दिवलै रो उजास कठै गयो?
बो भोळो-भाळो म्हारो बाळपणो कठै गयो?
⌘⌘

म्हैं हियै उपजा नीं सक्यो

म्हैं हियै उपजा नीं सक्यो
बै रूंखड़ा
जका म्हारा बडेरा रुखाळता हा।

दड़-दड़ पाणी राखता
राबां-रोटी रांधता
खेजड़ली री छांव में
अेवड़-गायां री खुरताल में
जीवण निपज सुपना बोवता हा
पण
म्हैं हियै उपजा नीं सक्यो
बै रूंखड़ा
जका म्हारा बडेरा रुखाळता हा।

भूरट, कांटी रा निदाण कर
डांडी बणावता
उण डांडियां रा
सब पदचाप पिछाणता
पण
म्हैं हियै उपजा नीं सक्यो
बै रूंखड़ा
जका म्हारा बडेरा रुखाळता हा।
⌘⌘

मनोज चारण

सोचै मन मैं डीकरी

टूटी दैळी,
चौखट टूटी,
टूटी छान अर छपरो भी,
पण नीं टूटी ओजूं तांई,
बेड़्यां
समाज री
जात री
बेटी होवण री।

कुळ-जात-गोत री झूठी बातां
घोर अंधारी काळी रातां
दान-दायजै री चिंता घुळती,
मन मांय कळपती ठंडै गातां।

चिंत्या रै आंगणियै
पळती बेलड़्यां
मन मांय निसांसा न्हाखै,
गरीब री झूंपड़ी मांय
रूप-रंग अर जोबन,
राम रूसै
जद इज फळापै।

घर सूं बारै निकळतां
डर लागै आजकलै,
गरीब री गोर नैं तो,
सगळा ईज सूनी समझै।

सगत्यां अर सतियां रै देस में,
कन्या रो जलम
झुका देवै बाप रा कांधा,
मन मसोस'र सोचै बेटी
रामजी खेल रचावै,
गरीब-गुरबै नैं
अमीरां री पोळ नचावै।

टूटेड़ी टपरी मांय बैठी,
मन मांय सोचै बेटी,
रामजी म्हां पर राजी होवै,
म्हारै बापजी री चिंत्या मेटै
जे कियां ई पार लागै,
भगवान! कियां म्हारा भाग जागै।
टूटेड़ी टपरी मांय
बिचार करै लाडली

ठिकाणो :
लिंक रोड, वार्ड नं. 3
रतनगढ़ (चूरू) राज.
मो. 9414582964

देख हवा जमानै री,
घर सूं बारै निकळती डरपै,
घर मांही बैठी सोचै,
बेट्यां री गत देख,
मां भारती कळपै।
⌘⌘

मांडणा

काची-काची,
गोबर रो लेव लगायोड़ी,
नूंवी निपीज्योड़ी भींता माथै
दादी मांड्या करती—
'दशाजी रो गोखड़ो'
मां धोळक लगाती आंगणै,
मांड्या करती मांडणा।

कठै सीख्या,
कुण सिखाया,
किन्नै सूं आया,
कुण जाणै,
खाली बैठी लुगायां रो,
आळ हो,
कै हो धडकणो,
स्यात म्हारी संस्कृति रो
जूना जुगां सूं जकी,
बैवै ही रगां में,
गांव-गळी, अर सगळी जगां में।

मानखै री जात
जद रैंवती गुफावां मांय
संघरस हो जीवणै रो
सागो जंगळी जीवां रो
मिनख बधै हो आगूंच,
उणी टैम,
गुफावां री डोळ्यां माथै,
जूनी जोगण्यां,
मांड्या पैला मांडणां।

साव आळी
साव भोळी,
जुगां जुग सूं
काची माटी री जायोड़ी
काची माटी नैं घोळ'र
जीवण रै काचापणै मांय
ढूंढै मुळकती जिंदगी
अर मांडै घर
अर घर में मांडै मांडणा।

केई खेल्या,
केई खेलग्या,
केई खेलैला,
इण संस्कृति रै आंगणै,
घणा जणा तो इयां ई गिया
नीं दीसै नाम निसाण
पण केई जबर हा पांवणा,
खेल्या, कूदग्या, गया,
पण लारै रैयग्या,
जकां रा मांडणा।
⌘⌘

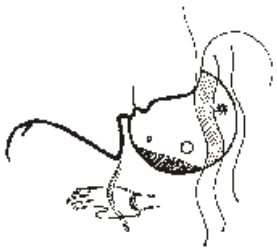

जयसिंह आशावत

कठै छुप्यो नूर छै

कुण को कांई कसूर छै! दुनिया को दस्तूर छै।
रात्यूं चाल्या बार्‌हा कोसां, जद भी मजलां दूर छै।

अपणा की टांग खींच, अपणू ही पटकै
कड़ो अर कसेलो छोड, मीठो-मीठो गटकै
मूंडा ऊपर राम नाम अर भीतर सूं अमचूर छै
कुण को कांई कसूर छै!

हाड गाळ शीत अर लू का थपेड़ा
सहता रिया सोच अेक खेड़ा जठै चेड़ा
जीवतां का लागू सगळा, मर्‌यां सूं कपूर छै
कुण को कांई कसूर छै!

जमीं अर मानवी को, नीठ गियो पाणी
चुप्पी साध मौन रहबो, सबसूं बढिया बाणी
भूख की रुखाळी माथै, सीळा तंदूर छै
कुण को कांई कसूर छै!

आंख की रूसाई करै, सूई का-सा छेद
हंसबा मुळकबा में, गहरो-गहरो भेद
मन की रुलाई मार, हंसा तो जरूर छै
कुण को कांई कसूर छै!

मनख्यां का झुंड में भी, बेगड़्यां की बास
अंधेरा का डर की मारी, दूबळो उजास
सिरजणहार थारो कठै छुप्यो नूर छै
कुण को कांई कसूर छै!

⌘⌘

ठिकाणो :
पोस्ट -नैनवा 323801
जिला-बूंदी (राजस्थान)
मो. 9414963266

मत बांटो मायड़ बाप रे

भावज लेल्यो म्हारो सारो बांटो आप रे,
अरजी म्हारी मत बांटो मायड़ बाप रे।

शंकर-पार्वती को जोड़ो मत बछटावो साथ
तीरथ-बरत-नेम-जप-तप ये लेल्यां आसीर्वाद
थे चावो छो सुसराजी थांनै सासू ना भावै
पण जोड़ायत के बिना लापसी पिवजी भी ना खावै
जोड़ो तोड़्यां सूं मिलेगो थांनै श्राप रे....

ना मांगे ये पुआ पापड़ी, ना सीरा सागूणी
मायड़ के तो तुळछी-थाणू, बापू चावै धूणी
भूख, तसाई और गरीबी सूं न कदै घबराया
म्हांका सुख के खातिर ही ये अब तक खटता आया
दुख-सुख काट्या छै दोन्यां नैं इक साथ रे....

मां पावन गंगा की धारा, बापू ग्यान सरोवर
यां सूं ही पहचाण आपणी कुळ की मूळ धरोहर
भोर में सुमिरण सिंझ्या वंदन अर अनुभव की बातां
गुजरै सारो दिन बच्चां में नीति-धरम सिखातां
पोता-पोत्यां में भरै छै संस्कार रे....

बापू जद जीमण नैं बैठै, मां तो पंखो झळती
मेहनत की रूखी-सूखी में रस अमरत को भरती
मां जद धार दुहारी करती, बापू बछड़ो पकड़ै
इक-दूजा को हाथ बंटाता कदै न आपस झगड़ै
चावै जनम-जनम को साथ रे....

तड़कै थांनै भी बांटेगा थांका जाया लव-कुस
जद थांनै अहसास होवैगो, गळत कर्‌यो छो सब-कुछ
पण पछतायां न्ह आवैगी, या बगत तो पाछी
तड़कै थांसूं भी बरतेगी, बात मान ल्यो सांची
बूढा होणूं तो जगत में सांच रे....
⌘⌘

बनवारी ख़ामोश, चूरुवी

अेक

लूवां लागी काचा पत्ता खेखरा हुयग्या
जाणै टाबर चाणचकै ई डोकरा हुयग्या

गिणत हुवै तो नांव बताऊं, घणकरा हुयग्या
मतलब री अपणायत पाछै ओपरा हुयग्या

सागी बातां मां सूं सुणकर झाळ नीं आई
करड़ा-करड़ा बोल जगत रा फोसरा हुयग्या

टिफ्फन, बस्ता, कपड़ा, मोजा, बूंट री घाली
सुदियां-सुदियां मायत घर में घाबरा हुयग्या

राज खजानै री बिरखा सूं कूंपळां निसरी
खेतां-खेतां अणमेधा रा कातरा हुयग्या

ठड्डैदारां साहित रा चौगान बांट लिया
कविता रै मंचां पर भेळा मसखरा हुयग्या

झूठी बिड़दाई सुण-सुण कर मुळकता हाकम
सांची बात सुणी, सुणतां ई आकरा हुयग्या

बगत बदळतां दार नीं लागै, बगत बदळतां ई
सोनै तुलता तुर्रमखां जी ठीकरा हुयग्या

घर रै ऊणै-खूणै में 'ख़ामोश' परदेसी
गजलां री ढाणी में इब तो आसरा हुयग्या

ठिकाणो :
242, काव्यकुंज
प्रतिभा नगर, चूरू
मो. 9413605170

दो

बादळ रै हाथां सोनैली तावड़ी गमगी
थांरी ओप घणी तोलां पण ताकड़ी गमगी

सूंटै साम्हीं छाकां हाळी टीबड़ी गमगी
खेत रुखाळी करती ऊभी खेजड़ी गमगी

गांव उजाड़ो मतना, हाकम सूं जद अरज करी
बावड़ कर देखां तो म्हारी झूंपड़ी गमगी

देख अंधारो साथी सगळा व्हीर हुया पाछा
सूळां गडती पगडांडी पर मोचड़ी गमगी

टीवी, कम्प्यूटर, मोबाइल री निजरां लागी
कड़तू घाली मायत काळी तागड़ी गमगी

चौड़ै चौगानां नकटाई क्यां सूं बांधोला
आंख्यां रै संकै री लाम्बी जेवड़ी गमगी

चूरू रो उन्याळो, काया भट्टी-सी सिलगै
स्याळो, जाणै हाथ-पगां री चामड़ी गमगी।

तीन

वै जाणै बारैखड़ी-सी है
गजलां पण फूलछड़ी-सी है

जिवड़ो है काचो कळवो-सो
जिनगाणी मारदड़ी-सी है

चन्नरमा री माड़ी-सी छिब
जाळै उळझी मकड़ी-सी है

तारां री लांबी पगडांडी
आभै माथै रखड़ी-सी है

गुलझारां रा बूंटां ऊपर
शेखावाटी पगड़ी-सी है

उच्छब-सो है थांसूं मिलणो
थांरी बातां रबड़ी-सी है

साळ आडळती है मन म्हारो
थांरी ओळ्यूं हटड़ी-सी है

'ख़ामोश' हुया ओखा मिलणा
पण आस घणी तकड़ी-सी है

चार

कैबत तांई सावण है
होठां ऊपर तरसण है

म्हारा दिन है बिणजारा
थांरी रातां जोगण है

अणदेख्या उणियारा धर
साम्हीं कुणसो दरपण है

आंसू ढुळक्यां गळ जावै
मन कागद रो बरतण है

जिनगी री नाळी माथै
अबखायां री धोवण है

लोगां सूं है हेत घणो
भाईड़ां सूं अणबण है

दो पगल्या है लुळतां नैं
बिड़दाई नैं आसण है

तन रो माचो है झोळी
मन री ढीली दावण है
⌘⌘

कमल सिंह सुल्ताना

राजस्थानी भासा

रजथानी भासा गजब, अबखी होवै आज।
चावै हिवड़ो चाव सूं, आवड़ सुण आवाज।।

हरदम राख्यां हुळसतां, तरवारां सूं ताज।
पण भासा नैं पांतरया, स्याम देयजै राज।।

कीरत आज कळीजगी, ज्यों जुध फंसै जहाज।
पाछो अेकर फेर दे, राजसथानी राज।।

बिन आपां की मावड़ी, कीकर सरसी काज।
बांधी आज है बेड़ियां, कद आसी इणरो राज।।

हेला कर-कर हारिया, कानां हुई न खाज।
मिनख मिनख अर मानखै, राजसथानी राज।।

सगळी भासा सांवठी, नवरंगां पर नाज।
अणमोली है आपणी, देसी कांई राज।।

अेकी जाजम आविया, सगळा आज समाज।
देदे रे हे केसवा, रजथानी नैं राज।।

नैणां में आवै नहीं, लिछमण जैड़ी लाज।
दिन ढळतां व्है देरियां, मात तिहारे राज।।

बरस घणेरा बीतिया, देख्या के दगबाज।
पण अबै देणो पड़सी, राजसथानी राज।।

सुणतां आणद ऊलड़ै, उर में करै उजास।
मैतव मिळसी मानता, आवड़ सुण अरदास।।

⌘⌘

ठिकाणो :
गांव-सुल्ताना
जिला-बाड़मेर (राज.)
मो. 9929767689

कूंत

पोथी : रात पछै परभात / विधा : उपन्यास / उपन्यासकार : संतोष चौधरी
संस्करण : 2019 / पाना : 160 / मोल : 250 रुपिया
प्रकाशक : राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्री डूंगरगढ़

डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत'

जूण अर हूण री अबखायां सूं जूझती नारी री अन्यारी आस उघाड़तो उपन्यास : रात पछै परभात

साहित्य सूं जुड़्योड़ा घणां वादां अर प्रतिवादां रै इण उळझाड़ भरेड़ै दौर में राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ सूं अबार ई प्रकाशित राजस्थानी उपन्यास 'रात पछै परभात' अेक खास आस जगावै। उपन्यास लेखिका संतोष चौधरी अेक सफळ गृहणी है अर औ वांरो पैलो उपन्यास है। इणसूं पैली आपरी अेक काव्यपोथी 'मेरा मौन' हिंदी में प्रकाशित है। केई सारी पत्र-पत्रिकावां में आपरी जुदा-जुदा विधावां री रचनावां छपती रैवै। नारी-मन री चाहत अर अचाहत नैं अेक नारी ई ठीक सूं समझ सकै, इण बात नैं औ उपन्यास सांगोपांग पुख्ताऊ करै। हलांकै उपन्यास री भासा, प्रवाह अर शिल्प आद री दीठ सूं अनुभवी विरोळकार इणरी मोकळी सीमावां बता सकै, सुधार सारू मोकळा सुझाव दे सकै। म्हैं ई मानूं कै इण उपन्यास नैं और गढण री गुंजाइस है। उणरै बावजूद अेक लेखिका रो औ पैलो उपन्यास राजस्थानी साहित्य-समाज में अेक नई किरण ज्यूं लखावै। उपन्यास री नायिका कृष्णा पग-पग पर प्रताड़ित होवण रै बावजूद नारी-मन री मूळ तासीर नैं बणायां राखण में सफळ हुवै। इण उपन्यास री कृष्णा महाभारत री कृष्णा जितरो चमत्कारी व्यक्तित्व तो नीं राखै पण आज री नारी रै मन नैं मजबूती देवण में आ कृष्णा उण कृष्णा (द्रोपदी) सूं दो कदम आगै लाधै। महाभारत री कृष्णा तो प्रतिशोध री झाळ में कौरवां नैं बाळ'र ई सांयती लेवै, पण आ कृष्णा तो खुद पर अत्याचार करण वाळां नैं ई आपरी सहनशीलता सूं जीतण में कामयाब हुवै।

श्रीमती संतोष चौधरी रो औ उपन्यास भारतीय नारी रै मन री झीणी सूं झीणी भावनावां नैं सहज अभिव्यक्ति देवै। हरख री बात आ है कै इण उपन्यास पर किणी वाद री छाया नीं पड़ी, इण कारण औ

ठिकाणो :
सह आचार्य अर अध्यक्ष,
हिंदी विभाग
राज. बांगड़ महाविद्यालय
डीडवाना (राज.)
मो. 9414587319

उपन्यास छोतीज्यो कोनी। राजस्थानी लोक में आ मानता है कै छोत पड़्यां पछै बीमारी बध जावै पण लेखिका इणमें सावचेती बरती है। 'रात पछै परभात' रा समूचा पात्र राजस्थान रै ग्रामीण परिवेश रो प्रतिनिधित्व करै। नर अर नारी दोनूं भांत रा पात्र आप-आपरै मूळ सभाव रै मुजब व्यवहार करता दीखै। पूरी कथा में कठैई इयां नीं लागै कै लेखिका जोरामरदी किणी पात्र पर आपरा विचार थोपण री आफळ करै। हां! उपन्यास री नायिका रै व्यक्तित्व में जितरा गुणां रो विकास दिखायो गयो है, वो नारी री महानता रो प्रमाण है। नारी जूण रा सांसा अर परिवारां रा रगड़ा-रासा तो सगळै ई देखण नै मिलै, पण इण उपन्यास में लेखिका नारी मन री अेक निकेवळी अर ऊजळी आस नैं उजागर करण रो व्हालो काम कर्‌यो है। इण कारण ई म्हैं इणनैं 'जूण अर हूण री अबखायां सूं जूझती नारी री अन्यारी आस उघाड़तो उपन्यास' नाम दियो है। जूण रो मतलब तो नारी जीवण अर हूण रो मतलब परकत रो बो क्रिया-बोपार, जिण पर आपणो जोर नीं चालै। नारी जूण री तो आपरी ई घणी अबखायां है, पण 'रात पछै परभात' री नायिका नैं तो परकत ई पग-पग माथै परखण सारू अड़ीखंभ लाधै। इतरी विपरीततावां अर परिजनां री अजोकती हरकतां रै बावजूद ई कथानायिका धीरज अर संयम री अेक मोटी मिसाल बण नारी मन री सांवठी संवेदनशीलता रो परिचय देय पाठक नैं असली जीवण मूल्य सूं जाणीजाण करै। आ उपन्यास लेखिका री निकेवळी दीठ है, जकी अबखायां सूं जूझती नारी री अन्यारी आस री ओळखाण करावै। असल में नारी ही जाण सकै कै नारी रै मन रो थाग काईं है।

'रात पछै परभात' री कथा, उपन्यास-नायिका कृष्णा नैं उणरै साहित्य माथै सरकार कानी सूं मिलण वाळै राष्ट्रीय पुरस्कार री घोषणा री खुसी साथै हुवै। आखी ऊमर दुखां सूं दोझ्योड़ी कथानायिका इण पुरस्कार री घोषणा सूं इयां खुस हुई, जाणै जेठ-असाढ री गरमी सूं झुलसेड़ी धरती पर पैंपरळां-पैंपरळां मेह बरस्यो हुवै। इण सांवरियै री लीला कुण समझ सकै। कृष्णा रै जीवण में पैली तो दुख पर दुख रा दौर आया अर समै पासो पलटै तो सुखां री झड़ी लाग जावै। अेक समै जिणरी रोटी रो सराजाम नीं, माथो ढकण सारू छत नीं, वा ईज कृष्णा खुद सरकारी नौकरी लागै, बेटी पढ-लिख आपरै पगां पर खड़ी हुवै, बेटो भारतीय प्रशासनिक सेवा री परीक्षा पास कर मोटो अधिकारी बणै, सरकार सूं साहित्य सिरजण सारू पुरस्कार ई मिलै। पुरस्कार री घोषणा वाळो खास पल कथा रै प्रारंभ रो आधार बणै। आपरी लाडली राशि अर लाडेसर शिव समेत सगळा मिलण वाळां सूं बधायां लेवती, मीडिया वाळां सूं सैंमूढ होवती कृष्णा आज घणी राजी ही। उणनैं मिल्यो औ साहित्यिक पुरस्कार फगत उण सारू ई नीं, उण जैड़ी मोकळी लुगायां सारू संबळ बणण री खिमता राखै। कृष्णा आपरी इण उपलब्धि पर मन ई मन मुग्ध हुई। मानखै रो सहज सभाव है कै वो आपरै अतीत नैं कियां ई कर'र भूल नीं सकै। कृष्णा रो अतीत ई उणरी आंख्यां साम्हीं नाचण लाग्यो। वा आपरै माता-पिता री तीसरी संतान ही। उणसूं बडा दो भाई किसन अर विसन। दो भायां री लाडली बैनड़, मां-बाबा रै आंगण री अलबेली चिड़कली घणै लाडकोड सूं पळी। उणरी कॉलेज री पढाई सारू मां-बाबा उणरै साथै स्हैर आया। कृष्णा पढ़ाई रै साथै-साथै आपरी लुळताई अर बात-चीत में ई औरां सूं घणी आगै ही। रूप-लावण्य इसो, जिणरै सामी गुललंजावां पाणी भरै। गेलै आवै, गेलै जावै। मां-बाबा,

भाई-भाभी सब कृष्णा रै व्यवहार सूं घणा खुस। इण बीच अेक अणहोणी घटना घटै। कृष्णा रो भाई विसन अचाणचकै चल बसै। परिवार पर दुखां रो पहाड़ टूट पड़ै। उणरै बाबा नैं लकबो मार जावै। मां रा पुत्र-बिछोह सूं बुरा हाल। कृष्णा ई भाई रै बिछुड़ण सूं बेहद दुखी। पूरो परिवार निरासा रै समदर में डूब जावै।

परिवार री दसा देख कृष्णा आपरी पढाई छोडणी चावै पण भाई किसन पढाई चालू रखावै। बाबा री बीमारी दिनोदिन बधती जावै। इण दौरान अेक घटना और घटै। कृष्णा री कॉलोनी में ई रैवण वाळो अेक धनवान घर रो मोट्यार उणसूं ब्यांव करण सारू बात करै। अर बात कांई जोरामरदी ब्यांव सारू दबाव बणावै। कृष्णा उणनैं मना करै पण वो आपरी मां अर रिश्तेदारां रै मारफत जियां-तियां कर कृष्णा सूं रिस्तो जोड़ण अर ब्यांव करण में सफल हुवै। घर री मंदी हालत, बाबा री बीमारी अर भाई री जिम्मेदारी नैं देखतां कृष्णा इण रिस्तै नैं मन मार'र कबूल करै। परणीज'र सासरै पूगै, उणी टैम सूं कृष्णा रै जीवण रो काळो अर का'लो समै सरू हुवै जको छेकड़ ताणी ई उणरो लारो नीं छोडै। घर में पैलो पग देवतां ई सासू अर नणद री नाजोगी हरकतां देख कृष्णा रै काळजै में डबको-सो उठै, पण जीवणसाथी सूं साथ री आस पाळ दुख नैं दाब्यां राखै। दिन आंथै। सुहागरात री सजी-धजी सेज देख मन हरखै। वा मन ई मन सपना संजोवै कै जिण लड़कै मनै खुद पसंद कर'र परणीजी है, वो म्हारो घणो ख्याल राखसी पण करम में जिणरै कांकरा लिख्या हुवै, उणनैं मोती कद मिलै। सुहागरात री पैली मुलाकात सारू जद पीवजी पधारिया तो दारू में धत्त हुयोड़ा, आंटा-टेढा पग पटकता लड़थड़ता आया। पैलै ई गासियै में माखी आयगी। अबै इण भोजन रो कांई तो स्वाद अर किणसी पोखण-सगती। प्यार रा दो मीठा बोल बोलण री ठौड़ गाळियां रा सरड़कां सूं बात सरू हुई अर जीवणभर आं दोनूं जीवां री मुलाकात जद-जद हुई तो औ ई दरसाव देखण नैं मिल्यो। कृष्णा नैं कदै ई घरधिराणी या मन री मगेजण रो दरजो नीं मिल्यो। बस वा आपरै उण करमखोड़लै पति सुरेशजी रै तन री भूख मिटावण अर सासू-सुसरा री टेल बजावण रो सस्तो साधन बण'र रैयगी। वा आपरी इण दुरगत रो कारण ई नीं समझ पाई कै आखिर उणरो गुनो कांई है। बिना किणी कारण उणनैं रोज प्रताड़ित होवणो पड़तो। धक्का-मुक्की अर गाळियां, रोज औ ई काम। दुख-सुख की हुवो पण परकत तो आपरो काम करै। कृष्णा रो पग भारी हुयो। वा सोच्यो कै अबै तो इण घर रा लोग आपरी आगली पीढी री आस में उणसूं की मिठासा पाळैला पण ना करै नारायण। रावण रै तो अेक ई भावण। उणरी कोख सूं लिछमी रो जलम हुयो। राशि नाम राख्यो। जच्चा अर बच्चा दोनां रो ध्यान राखणियो कोई नीं। घर मे ई बेघर जिसी जिंदगी जीवै। तीन-चार साल रो टैम इयां करतां-करतां निकळ जावै। इण दौरान अेक जीव और कृष्णा रै पेट में पड़ै। उणरो पति सुरेश इयांकलै ऊटपटांग चरित्र वाळो आदमी है कै उणनैं आदमी कैवणो आदमीपणै री तोहीन करणो है। उणरै हया-दया, आपरो-परायो आद रो कोई लेणो-देणो नीं। बस माया रो घमंड। चरित्र रो साव पोचो। जग्यां-जग्यां मूंढो मारतो फिरै। हैरान करण वाळी बात तो आ है कै उणरी कुलखणी माँ ई उणरै इण कुकरमां में उणरो साथ निभावै। कृष्णा रै रैवतां थकां वो अेक-अेक कर'र दो छोरियां सूं रिश्ता बणा'य ब्याव करण री बातां करै।

सुसरो पत्थर री मूरत बणेड़ो, कीं बोलै नी। अेक बड़ेर सुसरै रो बेटो देवर जको खुद सुरेश सूं दो चंदा आगड़ो। वो ई कृष्णा पर बुरी निजरां राखै। मौको देख उणसूं नाजायज रिश्ता जोड़ण री आफळ करै। कृष्णा रीस आयोड़ी उणरो भोगनो भांग देवै तो वो उलटो उणनैं ई दोसी बताय सुरेश सूं कृष्णा नैं कुटाय देवै। अर घणी कांई, अेक दिन कृष्णा नैं उणरी नान्हीं बेटी साथै घर सूं धक्का देय निकाळ देवै। अेक टाबर पेट में, अेक गोदी में लेयोड़ी कृष्णा आपरै अंतहीण भविस नैं जोवती आंसू ढळकावै। पण बठै उणनैं कुण बतळावै। मां ना मां रो जायो, सो ही देस परायो।

वा आपरै पीहर जावण रो सोच'र बस में चढै, पण आपरै भाई री पतळी आर्थिक हालत अर सामाजिक मजबूरियां नैं देख'र वा घणी दोगाचींती में पड़ जावै। इण दौरान उणरी निजर अखबार में छप्योड़ै अेक विज्ञापन पर पड़ै, जिणसूं कृष्णा री आंख्यां में चमक आवै। औ विज्ञापन कृष्णा रै जीवण में नयो मोड़ ल्यावण वाळो हुवै। वा मन ई मन संकळप करै कै अबै वा किणी रै भरोसै नीं रैवैला, खुद आपरै बळबूतै जीवण जीवैला। वा विज्ञापन में लिख्यै पतै पर पूग'र दो टाबरां नै पढ़ावण अर वांरै खावण-पीवण रो काम संभाळण री नौकरी लाग जावै। घर री मालकण अेक सामाजिक कार्यकर्ता हुवै। उणरो घरधणी ई आपरै काम सूं घणकरो बारै ई रैवै। सासरै में रैवतां कृष्णा आपरै पीहर में कोई सूं बात नीं कर सकती, पण अठै वा सुतंतर ही। अबै अेक-दो दिन सूं आपरी जलमदेवाळ मां अर व्हाला भाई-भाभी सूं बातां कर लेंवती। इण दौरान कृष्णा रै दूजो जापो हुयो। अबकाळै बेटो जलम्यो। नाम राख्यो-शिव। थोड़ा दिनां पछै कृष्णा गाम सूं आपरी मां नैं साथ ले आई। पाछी काम लागगी। कृष्णा रै जीवण री गाडी थोड़ीक पटरी पर आवण लागी, इतरै तो फेरूं अेक आफत आय पड़ी। वा जिण घर में नौकरी करती, वो घर मालक अेक दिन मौको देख उणसूं जोर-जबरदस्ती करण री भूंडी हरकत करी। घर मालकण घणी आछी लुगाई ही, बा आपरै मोट्यार अर कृष्णा दोनां रै सभावां नैं सावळसर जाणै ही, इण कारण बण कृष्णा पर कोई कळंक नीं लगायो, पण कृष्णा वा नौकरी छोड दी। दूजी नौकरी पकड़ी। आ नौकरी कृष्णा सारू वरदान साबित हुई। घर मालक अजयसिंह अेक मोटो अफसर हो। वो कृष्णा रै पति सुरेश रो मित्र अर सीनियर अधिकारी हो। वो कृष्णा सूं सुरेश रै घरै मिल्योड़ो हो। वो कृष्णा नैं इण भांत भूंडै हाल देख घणो हैरान हुयो पण सुरेश री आदतां सूं जाणीजाण होवण रै कारण बण मन नैं समझा लियो। अजयसिंह री मां रो पग तूटग्यो, उणरी सेवा सारू अखबार में विज्ञापन दियो हो, उणनैं पढ'र ई कृष्णा इण काम सारू आई। कृष्णा री सेवा सूं अजयसिंह री मां घणी राजी ही। अजयसिंह ठीमर अर दयालू मिनख। उण कृष्णा नैं पढ़ाई कर'र आपरै पगां पर खड़ी होवण री हूंस दीनी। साथै ई बो कृष्णा नैं लेखन सारू प्रेरित करी। बठै रैवतां कृष्णा पढाई करी अर अेक ऑफिस में नौकरी लागगी। बैंक सूं लोन लेय कृष्णा अेक छोटो-सो घर ई मोल ले लियो। बेटो-बेटी मोटा हुया। बेटी बैंक पीओ री त्यारी करै अर बेटो दिल्ली में त्यारी कर'र आईएएस लागग्यो। साहित्य में मोटो पुरस्कार पावण रै साथै सरू हुई कहाणी इतरै लांबै फ्लेश-बैक रै बाद पाछी बठै ई आय संपन्न हुवै।

उपन्यास रो ओ कथानक परिवार अर समाज सारू सांवठी सीख देवण वाळो है। परिवार रै सदस्यां रा जिम्मां अर जोखमां सूं रूबरू करावण वाळो है। रिश्ता जोड़ण री जुगत बतावण

अर रिश्तां नैं निभावण री दरकार इण उपन्यास सूं उजागर हुवै। कठैई प्रेम-ब्याव री बात हुवै तो कठै ई अरेंज-ब्याव री बात हुवै। आप-आपरी चावना मुजब लोगबाग दोनूं भांत रै ब्यावां रै गुणावगुणां रो बखाण करै पण 'रात पछै परभात' री कृष्णा अर सुरेश रो ब्याव तो लव अर अरेंज दोनां रो मेळ है। क्यूंकै सुरेश तो कृष्णा नैं चावै अर आप कानीं सूं प्रस्ताव राख'र ब्याव करै। कृष्णा सुरेश नैं नीं पसंद करतां थकां भी घर वाळां री पसंद नैं आपरी पसंद मान'र सुरेश रै साथै गठजोड़ै री गांठां जोड़ै। पण ओ सगपण फळापै नीं। लेखिका इण बात रो साफ संकेत करै कै मोटा घर देख'र जोड़ेड़ा सगपण तो इसा ई सिग चढ़ै। उपन्यास री कथा घणी रोचक अर जथारथ रै साव नेड़ी होवण रै कारण पाठक नैं प्रभावित करै। लेखिका संतोष चौधरी जी इण बात सारू बधाई री पात्र है कै वां कथानक रो अणूंतो विस्तार नीं कर्‌यो। ना ही किणी भांत री सीख-उपदेश री खेंचळ करी। उपन्यास रा मोकळा पख है, जका सुधी पाठक सारू चिंतन रा कई आयाम खोलै। इण उपन्यास री कथा अर पात्रां नैं लेय मोकळी बात करी जा सकै, जको काम म्हैं सुधी पाठकां पर छोड़ूं।

उपन्यास री नायिका कृष्णा रै चरित्र में नारी-सुलभ कंवळी भावनावां रै साथै ई अवसर आयां कठोर सूं कठोर निर्णय लेवण री खिमता नैं दरसावण में सफल होवण सारू उपन्यास लेखिका नैं लाख-लाख रंग देवूं। रंग इण खातर कै लेखिका आपरी कथानायिका नैं ना तो देवी बणावण री खपत करी तो ना ही परिस्थितियां री मार सूं हार'र आबरू रो बोपार करण री दिस में कदम बढावण दिया। कृष्णा आपरै जीवण में आपरै बाप अर भायां टाळ जिण-जिण पुरुष पात्रां सूं मिली, वां मांय सूं पुलकित अर अजयसिंह नैं छोड'र सगळां उणरी आबरू साथै खेलण री नीत पाळी। उणरै बावजूद कथानायिका पुरुष जात सूं नफरत नीं पाळै, आ अेक लेखिका री सम्यक दीठ है। कृष्णा अर अजयसिंह रै मन रा तार मिलण रै बावजूद भी राशि अर शिव रै संस्कारां पर कुप्रभाव नीं पड़ण देवण सारू वै दोनूं दूजी बार कदैई अेक नीं हुवै, औ तथ लेखिका री ऊंडी अर संस्कारी दीठ रो पुख्ता प्रमाण है। जकै मोट्यार जीवणभर सुख रो अेक सांस नीं लेवण दियो, दर-दर री ठोकरां खावण सारू मजबूर करी, वो ई जद दुर्घटना रो शिकार होय अस्पताळ में भरती हुवै तो कृष्णा उणरो इलाज करावै, आपरै साथै घरै लावै अर उणरी सेवा कर'र जीवण नैं सार्थक समझै। धन्य है हिंदुस्तान री नारी। कृष्णा री इण बधताई पर राजस्थानी लोकसाहित्य रो अेक दूहो खरो उतरै :

अवगुण माथै गुण करै, दिल रो मेट दरद।
मार सकै (पण) मारै नहीं, वाको नाम मरद।।

उपन्यास नैं पढण सूं आ ठाह लागै कै लेखिका राजस्थान रै ग्रामीण अंचल सूं जुड़ी थकी अेक संवेदनशील संस्कारित नारी है, जकी पूरी ईमानदारी सूं आपरी रचनावां रै पात्रां साथै न्याय करतां थकां संस्कारां री अंवेर करै। राजस्थानी री मोकळी लोकोक्तियां अर कैबतां रो फबतो प्रयोग भासा रै फूठरापै में बधेपो करै। म्हैं इण सरस रचना सारू संतोष चौधरी जी नैं मोकळी मोकळी बधाई देऊं। कामना करूं कै आ कलम तर-तर निखरती जावै अर अेक दिन साहित्यिक जगत में ओपतो मुकाम पावै।

⌘⌘

कूंत

पोथी : वै बी कांई दिन छा / विधा : संस्मरण / लेखक : हरिचरण अहरवाल
संस्करण : 2019 / मोल : 200 रुपिया
प्रकाशक : बोधि प्रकाशन, जयपुर

मुकुट मणिराज

समै का साचा दस्तावेजी संस्मरण : वै बी कांईं दिन छा

भाई हरिचरण अहरवाल की संस्मरण पोथी 'वै बी कांईं दिन छा' में 25 संस्मरण सामिल छै। संस्मरण अपणां बगत को दस्तावेज होवै छै। संस्मरण पाठक कै तांईं बीत्या बगत की झांकी का दरसण करावै छै। रचनाकार अपणां बीत्या दिनां का वृत्तांत की लेरां-लेरां ऊं बगत की अबखायां की आढी इसारो करै छै। अभावां की जिंदगी में बी मौज मस्ती अर दमदारी सूं जीबा को आलम, लुट-पिट'र बी पाछाई उबा होबा को जीवट अर बुरा बगत में बी ईमान-धरम अर नेकी पै चालबा का संस्कार देखबा में मिलै छै।

गांव को बाळपणो। आज की पढ़ाई की टेंशन सूं दूरै छो। पढ्या जतनै पढ्या फेर दिनभर कांई न कांई खेल खेलबो, माळ खेत, खाळ खोचर्‌या, नदी-कुआ तांईं की पगडांड्यां नापबो। रकचूंच्यां पै हींदा खाबो, अर जसी पाकै उसी खा पीर अलमस्त रहबो। आज तीन साल का बाळक का कांधा पै पांच सैर को बैग धर्‌यो छै। प्हली स्कूल, फेर ट्यूशन अर घरनै रात पड़्यां तांईं को होम वर्क। ऊं जमाना में स्कूल में पढल्या ज्ये पढल्या, थोड़ो-घणो होमवर्क अेकाध घंटा में नमट जातो। अर फैर खेलबो। छीणा पत्ती, कबड्डी, कुलाम ल्हाकड़ी, गुल्ली-डंडा, सुविधा हो तो राउंड बल्लो,अर रकचूंच्यां का झूलां को आनन्द तो ऊई जाणै छै, ज्यै उंपै झूल्यो होवै। गरणगट्ट फरता रकचूंच्यां में तो लेखक नै जिंदगाणी को दरसाव द्यो छै। बीच में कीली पै टंकी लाठ कै दोनी आड़ी अेक-अेक जणो बैठ तो जावै, पण अगर बैलेंस नं बणायो तो धड़ाम सूं नीचै आतां देर नं लागै। ''ज्यै रकचूंच्यां पै नं बेठ्यो ऊंकी कांईं जिंदगाणी, अर जिंदगाणी की नांईं नं फर्‌यो ऊ बी कांईं रकचूंच्यो, खेलबा की लत अर भाईजी को डर। दोनी लारां-लारां।''

ठिकाणो :
बी-44, संतोष नगर प्रथम थेगड़ा रोड, बोरखेड़ा कोटा (राज.) 324001
मो. 8529260580

हकीकत में अब गांव वै गांव नं रह्या। सब कुछ बदळग्यो, लेखक पीड़ा जतातो क्है छै, ''पाछला दिनां की याद आवै छै तो लागै छै गांव गांव छा। गरियाळा छा। गढारां छी अर अंधेरा कै पाछै उजाळो छो।''

'गरज बावळी' संस्मरण में गांव ब्याज सांटे रुप्या लेबा कांण गरीब, मजूरग्या, कसाण, बड़ा लोगां की कतनी जी हुजूरी करै छा। बोराजी घणी मुस्कल सूं रुप्या दे छा। फैर बी मरजी आवै जै मांडर,अंगूठा-दसखत करा ले छा। गरज बावळी रह छै नं कह जै करा लै छै।

'घांस भैरूजी की जात्रा' संस्मरण में गांव में जद मनख्यां अर जानवरां में रोग-दोग आ जावै, आसाढ बीत जावै ज्यां तांईं बी बरसात नं होवै, तो गांव का सारा देव-देवतां की पूजा, गांव बारै रोटी अर घांस भैरु फैरबा की पुराणी परम्परा को हवालो छै। 'घांस भैरूजी की जातरा' को बरणन पढ'र म्हनैं तो धन्नालाल जी सुमन की किसनगंज का घांस भेरुजी की कविता याद आगी। 'ग्हाढ का लाड़' में लेखक गांव-गांव मं जाणतेरयां, भोपा अर भाव राव का माध्यम सूं ईं इलाज होवै छा ऊ को वरणाव सांगोपांग करयो छै। बीं टैम लोगां कै तांईं यां चीजां पै पूरो भरोसो होवै छो तो काम बी सिध्ध होवै छा। केई तरहां की घटना को जिकर करतां थकां अस्या चमत्कारां की बात करै छै। अर विज्ञान कै गोडै ज्यां बातां को निदान कोई नं, ऊं गाढ़ रखाणै तो कोई का दो बोल सूं या भभूत की अेक चीमटी सूं ईं हो जावै छो ।

पोथी में 'कुळ की बेलड़ी' संस्मरण सांतरो छै। अेक पोथी धरती पै असी छै, जै सबी समाजां की कुळ, खांप कर बड़ा बूढां का नांव काणां कतनी पीढ्यां सूं लेर चालै छा। वा छै जागा की पोथी। जागै जै अपणां जजमानां नी अपणां पुरखां की याद दिलावै। अरे सात पीढ्यां को हिसाब राखै। अेक पंथ दो काज। जजमानां की वंशावली की रक्सा अर खुद की पेट भराई। लेखक केई ठाम पै अपणी सम्मति दै छै।

'जाण पछाण' संस्मरण में लेखक स्हैर में पड़ोस्यां नै बी नं जाणै पछाणै लोग ईं बात की आढी असारो करै छै। कोई पड़ोस में आर पूछलै कै क्हां फलाणां जी रह छै तो नाड़ हला देता— 'पता नहीं'। गांव मं कोई को भी पावणों होवै ऊ सारा गांव को पावणों छै। धणी सूं प्हली तो दूसरा ई ऊंकी आवभगत कर लै छै अर स्हैर में दूसरां की छोड़ो, खुद को पावणों बी अेक घंटा में बोझ बण जावै छै।

'चौमासो' संस्मरण में ईं रितु का लेखक मारमिक चित्राम उकेरया छै। लेखक अपणां बचपण नै याद करतो लिखै छै, ''छोरा-छोरयां कै कांईं की टेंसन। अबार की नांईं किताबां कै थोड़ी ई चिपक्या रह छा, बाळक। स्कूल सूं आतां ईं काम करयो, थैलो पटक्यो अर मस्त, होगी पढाई। चौमासा का खेल गांव में नाळा ई रह छै। चंगा पो, सोळा सार, न्हार-बकरी। स्याणां-बडा तास खेलै छा अर कै तेजाजी गावै छा। पाणी उघड़्यो रह तो पव्वो, छीणा पत्ती, सतूळ्यो,चोर सिपाही। अर ये नं तो कांच की अंट्यां अर जाळी भंवरां।

'माई सातै को मेळो' ई अेक मेळै-मगरियै की जूनी यादां को संस्मरण छै। मेळा को छुछ सबसूं ज्यादा बाळकां कै रह छै। हर गांव में या कोई नजदीक का गांव में मेळा जरूर भरै छै। वांमें माई सातै को मेळो अर तेजाजी को मेळो खास छै। मेळा में खाबो पीबो, झूला चकरी में

झूलबा को अर खेल खिलोणां लेबा को मौको मिलै छै। जादूगर का तमासा, रींछ बांदरां का तमासा, सट्टा चूड़ी फेंक तमासा। मिनखां की रेलमपेल। मेळो तो मेळो ई रह छै। ऊं टैम की गांव का लोग बारा म्हीनां तांईं मेळा की बाट न्हाळै छा। पण आज का मेळा हाईटेक होग्या।

'पाणी को कायदो' संस्मरण में कवि धरती को वाटर लेवल कम होबा की चिंता करै छै। पग-पग पै बोरवेल होबां सूं पाणी पाताळ में जा बैठ्यो अर बरसातां कम होबा लागगी।

'स्याग में स्वाद छो' संस्मरण में लेखक गांव की स्याग्यां को स्वाद नं भूल सकै। खेत खलाण सूं लेर हांडी तांईं हरच्यो ई हरच्यो। गांव की जुरत गांव में ईं पूरी हो जावै छी। चीज कै बदळै चीज। घणी स्याग्यां तो फोकट की छी। पण अब गांवां में बी नो नगद तेरहा उधार हाळो काम होग्यो।

ईं पोथी का संस्मरणां में ज्यै खास बातां देखबा में मली। वै छै :

1. ज्यादातर संस्मरण 'बात' विधा में या पढ़ सैली में लिख्या ग्या छै। जींमे क्रिया वाक्य का अंत मं नं आर बीच मं आवै छै। जीसूं बात को प्रवाह बण्यो रह छै।

2. कुछ संस्मरण कहाणी जस्या, आलेख जस्या अर कुछ रेखाचित्र जस्या छै ।'स्कूल की इबारत मांगता गुरूजी' अर 'छीपां कै दाजी' घणा सोवता रेखाचित्र छै। 'पढ़ाई कै पाछै भागती जनता', 'गेला पै आग्यो', 'जीव खाती खोथळ्यां', 'जाण पछाण' 'पाणी को कायदो', 'मायड़ भासा' अर 'पण थां पगां थोड़ी चालैगा' ये सुधारवादी संस्मरण छै, ज्यांमें लेखक मिनखपणां की सीख देतो लागै छै।

3. गहरी आस्था अर बिस्वास। परम्परां मं आस्था बणायां राखबा की आस।

4. लोचदार छोछी ग्रामीण भासा। यानी कै ठैठ को ठाठ देखबा में मिलै छै ।

5. कहावतां कर मुहावरां को प्रयोग देखबा जोग छै—उमन्या-सूमन्या करबो, गरज पड़्यां का काकाजी, कोई ठाम पै गैंहू घणां तो कोई ठाम पै मुट्ठी चणां, गाढ का लाड़, पापी पेट को सवाल, कै तो गांठ भली कर कै बसवास भलो, बूढ़ा मिनख को स्याळो अर पुराणां टापरा को चौमासो नठां क्हडै छै।

6. हाड़ोती का मूल सबदां को प्रयोग : जस्यां—झुझरक्यो, पकथ्यो, फदांग दणी सैक, सलकणी, कुतेरो, ल्हाकडी, छाणां ठीठका, ठूंडी, डूंडी, कुरकटा, डागळी, गबीचा, कका ककावळ्या, दीतवार, टमीको, गरज बावळी, द्वाळी, दोराड़ी, बरानी, खरार, बीजबजोळा, दरड़क, फुरच्या, ठठूमो, आळ्यो, कूंची (चाबी) कामड्यां, उणग्यारो, रूंखड़ा, मोट्यार, रोस अहमान,अळा पळा, छींतरो, मूंडो, सूंसाडो, डाह, स्याग, झांझंर्डो, डालो ठांगलो, नछोछ, आखरखेटो आद अस्याण का सबद लिख्या छै ।

लगभग सारा ई संस्मरण कोई नं कोई सीख, कोई नं कोई संदेस दे छै। स्वच्छ परम्परावां की तरफदारी करै छै। ये संस्मरण अपणां समै का सांचां दस्तावेज छै, ज्यां भूली बिसरी बातां नी याद दिलावै छै। भूतकाल की यादां ताजा करावै छै। वांईं आज का बदळता परिवेस सूं तुलना कर'र समै का बदळाव नै परखबा को मोखो दै छै ।'वै बी कांईं दिन छा' अेक असी ई संस्मरण पोथी छै। भाई हरिचरण अहरवाल कै तांई घणी घणी बधायां।

⌘⌘